

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५८

राजस्थानी-हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान.

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

एम. ए., साहित्यरत्न,

राजस्थानी शोध सहायक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८

प्रथमावृत्ति ५००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३

{ ख्रिस्ताब्द १९६१

{ मूल्य २.७५

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur, Punjab; Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad; Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General
Editor, Gujrat Puratattva Mandira
Granthavali; Bharatiya Vidya
Series; Sinhgahi Jain Series
etc. etc.

* *

No. 58.

Catalogue of Rajasthani Manuscripts

Part-Second

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratishthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2018]

All Rights Reserved

[1961 A.D.

CATALOGUE OF RAJASTHANI MANUSCRIPTS

Part Second

★

Edited with introduction and appendixes by

SHRI PURUSHOTTAM LAL MENARIA,

M.A., Sahityaratna,

Rajasthani Research Assistant

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

★

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

**THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)**

V.S. 2018]

[1961 A.D.

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR.

उद्देश्य

१. राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना ।
२. प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रंथों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना ।
३. साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन, अन्वेषण, संशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भंडार (मुद्रित ग्रन्थालय) स्थापित करना और उसमें देश-विदेश में मुद्रित विविध विषयक अलभ्य-दुर्लभ्य सभी ग्रंथों का यथासंभव संग्रह करना ।
४. संगृहीत सामग्री से शोधकर्त्ता अध्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसंधान में सहायता पहुँचाना ।
५. राजस्थान के लोक-जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत, सांप्रदायिक भजन, पदादिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार, धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक आचार-विचार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की शोध, संग्रह, संरक्षण, एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना ।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर में वर्ष १९६०-६१ तक १५,६२५ हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह किया जा चुका है। इनमें से वर्ष १९५७-५८ तक प्राप्त ग्रन्थों की सूची “राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १” प्रकाशित की जा चुकी है। अब वर्ष १९५८-५९ में प्राप्त ७७४ राजस्थानी ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस सूची का सम्पादन हमारे प्रतिष्ठान के शोध सहायक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न ने योग्यतापूर्वक किया है। श्री मेनारिया ने परिश्रमपूर्वक ग्रन्थ-सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य प्रस्तुत किये हैं और परिशिष्ट के अन्तर्गत कतिपय ग्रन्थों के आदि-अन्त देने के अतिरिक्त ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका तैयार की है। सन्तोष का विषय है कि सूचीपत्र के निर्माण में निर्धारित रीति-नीति का तत्परता-पूर्वक पालन किया गया है।

प्रस्तुत सूची-पत्र के प्रकाशन-व्यय का आधा भाग केन्द्रीय सरकार के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय ने प्रान्तीय भाषा-विकास योजना के अन्तर्गत प्रदान किया है, तदर्थ हम आभारी हैं।

भारतीय स्वाधीनता दिवस
१५ अगस्त, १९६१ ई०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

विषय - तालिका

विषय	पृष्ठ संख्या
सञ्चालकीय वक्तव्य	
सम्पादकीय प्रस्तावना	
ग्रन्थ-सूची	१-४८
परिशिष्ट १ [कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]	४९-५८
परिशिष्ट २ [ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका]	५९-६१

संकेत - तालिका

१. रचना-काल — र.का.
२. लिपि-काल — लि.का.
३. लिपिकर्ता — लि.क.
४. रचना स्थान — र.स्था.
५. लिपि-स्थान — लि.स्था.
६. ग्रन्थाङ्क से तात्पर्य प्रतिष्ठानकी ग्रन्थ - प्राप्ति पञ्जिकाकी संख्या (Accession Number) से है ।
७. ग्रन्थाङ्क के साथ कोष्ठकमें दी गई संख्या सम्बद्ध ग्रन्थकी कृति-संख्या है ।
८. लिपिसमय और रचनाकालके निर्देशन हेतु ग्रन्थोंके अनुसार सर्वत्र विक्रमी संवत् प्रयुक्त हुआ है ।
९. पुष्पाङ्कित "३" ग्रन्थका विशेष परिचय परिशिष्ट संख्या १ में प्रस्तुत किया गया है ।

सम्पादकीय प्रस्तावना

राजस्थान और इससे संबद्ध प्रदेशों के भूतपूर्व राजाओं, जागीरदारों, विद्वज्जनों, साहूकारों, मन्दिरों, मठों, उपाश्रयों तथा राजकीय सार्वजनिक संस्थानों के अधिकार में राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ प्रचुर संख्या में उपलब्ध होते हैं। भारतीय साहित्य, इतिहास, राजनीति और दर्शनादि विषयों के अध्ययन को पूर्ण करने में इन ग्रंथों का विशेष उपयोग और महत्त्व माना गया है, इसलिये अनेक विदेशीय संग्रहालयों और पुस्तकालयों में भी राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह एवं संरक्षण विशेष प्रयत्न से किया गया है। विद्वज्जगत की जानकारी और अध्ययन के लिये ज्ञात समस्त राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों का प्रकाशित होना नितान्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है, तदनुसार रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर में संगृहीत २१६६ ग्रंथों का परिचय “राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ-सूची, भाग १” के रूप में गत वर्ष प्रकाशित हो चुका है। इसी क्रम में “राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ-सूची, भाग २” में ७७४ ग्रंथों का परिचय प्रस्तुत है।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के सूची-पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—

१. सूचनात्मक, और
२. विवरणात्मक।

प्रस्तुत ग्रंथ-सूची सूचनात्मक है, जिसमें ग्रंथ-सम्बन्धी कर्ता, लिपि-समय, पत्र-संख्या, रचना-काल, लेखन-स्थान, लिपिकर्ता आदि के विषय में अत्यन्त संक्षेप में सूचनाएँ दी गई हैं। स्पष्ट है कि “विवरणात्मक” सूची की पूर्ति “सूचनात्मक” से नहीं की जा सकती। सर्व प्रथम ज्ञात संपूर्ण प्राचीन राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों के परिचयात्मक सूचीपत्रों का प्रकाशन विशेष आवश्यक है और इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ-सूची तैयार की गई है।

इस ग्रंथ-सूची में सङ्कलित कृतियों में कबीर सम्बन्धी रचनाओं (क्रमाङ्क ६७ से ७६), कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली, सचित्र (क्रमाङ्क १८१), द्रौपदी चउपई (क्रमाङ्क २५०), नागराज पिंगल (क्रमाङ्क ३२९), पञ्चसहेलीरा दूहा (क्रमाङ्क ३६२), पन्दरमी विद्यारी वार्ता, सचित्र (क्रमाङ्क ३७९), पृथ्वीराज पवाड़ा (क्रमाङ्क ४१३), रसरतनागर (क्रमाङ्क ५१६), राधावल्लभ ख्याल,

ख्यालायत (क्रमाङ्क ५३३), रावत प्रतापसिंघ म्होकर्मसिंघ हरिसिंघोतरी वात (क्रमाङ्क ५५३), मुंहणोत जोगीदास कृत जन्मभेद (क्रमाङ्क ६३६) और महेश कवि कृत हमीर रासो (क्रमाङ्क ७६४) विशेष उल्लेखनीय हैं। कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथों के आदि-अन्त भी सूची के अन्त में परिशिष्ट सं० १ के रूप में दिये गये हैं। समस्त ग्रंथों के परिचय वर्णक्रमानुसार लिखे गये हैं और पाठकों की सुविधा हेतु परिशिष्ट सं० २ में कर्तानामानुक्रमणिका भी प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत सूची में १६ वीं सदी से २० वीं सदी विक्रमी तक रचित एवं लिखित कृतियों का संकलन किया गया है। उदाहरणार्थ प्राचीनतम रचित कृति छीहल कवि कृत "पञ्चसहेलीरा दूहा" (क्रमाङ्क ३६२) वि० सं० १५७५ की है और प्राचीनतम लिखित प्रति रतनचरित्र कृत "सम्यक्त्व-कौमुदी" (क्रमाङ्क ६६३) वि० सं० १६०६ की है। सूची की अधिकांश कृतियाँ १८ वीं और १९ वीं सदी विक्रमी में रचित और लिखित हैं। सूची से प्रकट है कि ग्रंथ-रचना और लेखन का कार्य मुख्यतः राजस्थान, मालवा और गुजरात के विभिन्न स्थानों में हुआ है, क्योंकि सम्बद्ध काल के प्रमुख भारतीय विद्या-केन्द्र इसी क्षेत्र में विद्यमान थे। प्रस्तुत सूची से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रंथों की रचना और लेखन सम्बन्धी कार्यों में पुरुषों के साथ-साथ अनेक विदुषी महिलाएँ भी सक्रिय भाग लेती थीं।

सूची के ग्रंथ-परिचय-पत्र श्रीयुत् नाथूलालजी त्रिवेदी, साहित्याचार्य के सहयोग से तैयार किये गये हैं। श्रीयुत् अग्रचन्दजी नाहटा ने सूची को देख कर आवश्यक संशोधन करने की कृपा की है। सूची का निर्माण परम श्रद्धेय पद्मश्री मुनि जिनविजयजी और श्रीयुत् गोपालनारायणजी बहुरा के निर्देशन में किया गया है। तदर्थ मैं उक्त सभी महानुभावों के प्रति आभारी हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
श्री गणेश चतुर्थी, सं० २०१८ वि०

पुरुषोत्तमलाल सेनारिया,
एम. ए., साहित्यरत्न
सम्पादक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान - राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग २]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६०२	अंजनारास		१८२७	१२	लि. क.-गुमानी ।
२	१००५२ (२३)	अंजनासतीनोरास		१८६७	१-३०	लि. स्था.-पाली ।
३	८२६८	अंजनासतीनोरास		१७वीं	१२	लि. क.-सिद्धिविलासगणि,
४	८५३६	अंजनासुन्दरी चउपई		१७६६	१७	मरोट्ट (मारोठ ?)
५	६८५३	अंजनासुन्दरीरास		१८७३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
६	६८६१(७)	अंतरीकजीरो स्तवन		२०वीं	३१वां	लि. क.-अजबसुन्दर ।
७	१०१८० (३२)	अंतरीकपाशर्वनाथस्तवन		१६वीं	७७-७९	लि. स्था.-मेदिनी तट ।
८	१००५१ (२१)	अंतरीकरो स्तवन		१८८५	१४६-१५०	
९	१०१८० (४२)	अंतरीकस्तवन		"	११६-१२५	
१०	१०२४८ (११)	अइसत्तरिषिसज्जाय		१८१२	६७, ६८	
११	८७२०	अगडदत्तरास	श्रीसुन्दरवाचक हरचंद	१६८१	२०	
१२	८८४२	"	पाश[श्व]चंद	१६६२	१६	
१३	८४००(३४)	अजितशांतिस्तव		१६वीं	७८-८०	
१४	७६६४	अठार भार वनस्पतिनो परिमाण		१६९३	३०	लि. क.-हरषचंद्र, रामपुरा (कोटा) ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	८१२४	अष्टौदीपविचार		१६वीं	६	
१६	१०१८० (२७)	अतीत-अनागत-वर्तमान चौबीसी-स्तवन		"	६८वां	
१७	१०६७७	अद्वैतावभुतनाटक	वरजी देवकृष्ण	१६३५	४०	लि. क.—साहु होरादास ।
१८	८५२७	अध्यात्मसारप्रश्नोत्तर	मुनि कुंवरविजय	१८८५	२२७	लि. क.—ऋषि हृकमचंदजी, पाली मध्ये ।
१९	८४२२ (३२)	अनाथीधनरिषिदसाण	होरानन्व सूरि	१८वीं	६८-१०५	
२०	१०१८० (३)	अनाथी सिद्धा		१६वीं	२२वां	
२१	८४४७	अमरसेन-वयरसेन-प्रबन्ध		१६वीं	२०	अपूर्ण
२२	८१०८	अयवंती-गजसुकुमाल-रास	जिनहरष	१६वीं	६	र. का. १७४१
२३	८१३४	अयवंती-सुकुमाल-चरित्र		१६वीं	५	"
२४	६१५२ (५)	अयवंती-सुकुमाल चौडालियो		१६०५	६६-७०	
२५	६८६१ (६)	अरजिनस्तवन		२०वीं	३४वां	
२६	६७८०	अलोवणा		१८वीं	६	
२७	८४२८ (४)	अष्टप्रकारी पूजा		२०वीं	१६-६१	
२८	६८६१ (१८)	"		"	८३-६६	
२९	६८६१ (१२)	अष्टमीनु स्तवन	समरो	"	४१-४४	
३०	८८३०	अष्टापदमहातीर्थस्तवन		१७६०	५	लि. क.—तिलकरुचिमुनि ।
३१	८३२७	आगमसारोद्धार	देवचंद	१८७५	५५	लि. स्था.—पट्टणानगर । र. का. १७७६ । र. स्था. सारोठ । लि. क.—मानसुन्दर । लि. स्था.— बीकानेर । प्रथम पत्र अप्राप्त ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२	८४२६(७)	आचार्य चैत्यवन्दन तथा आचार्य स्तवन	श्रीसार	२०वीं	४६, ४७	लि. क. ज्ञानचंद
३३	६७०१	आठवीं वार्ता		१८५८	१५	लि. क.-रूपचंद थावरया बजार- मध्ये रतनाम नगरे ।
३४	८६०८(१)	आणंदश्रावक चौपई		१८६८	१-१४	
३५	८११६	आणंदसिद्धि[संधि]		१८वीं	११	
३६	१००५२(३)	आत्मनिन्दा		१८६७	६८-१०५	
३७	६५६३	आत्मबोध	श्रीसार	२०वीं	२८	र. का. १६३० । पत्र सं. १ और २ अप्राप्त ।
३८	१०१८० (६७)	आत्मभास		१६वीं	२१३-२१५	
३९	१०१८० (४६)	आत्मशिव्यागीत		"	१३५-१३८	
४०	१०१८० (२५)	आत्मशिक्षासंज्ञाय		"	६४वां	
४१	१०१८० (३५)	आत्मसंज्ञाय		"	८५-८६	अन्तिम पत्र पर गोगागीत, नेमि नाथ गीत आदि ।
४२	१०१८० (३४)	आत्मज्ञानसिंहाय	कर्मसिंह	"	८५वां	
४३	१०१८० (४४)	आत्मसंज्ञाय		"	१३२-१३४	
४४	८४००(३१)	आदिजिनगीत			७३वां	बोकानेरके किसी जैनमंदिरमें स्थित प्रतिमासम्बन्धी स्तोत्र ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५	८२८७	आदिनाथविवाहलो		१७४४	१३	
४६	१०१८० (५६)	आदिनाथस्तवन		१६व	१८१	
४७	७६५३	आनन्दसंधि		१८३६	६	र.का. १६१८। लि.स्था. देशजोकर (बीकानेर) पत्र १, २ अप्राप्त।
४८	८१५५(अ)	आर्द्रकुमारीकथा		१६१६	१६	पत्र संख्या ६ अप्राप्त।
४९	६१८०	आरतीसंगलदीपक		१६१६	१०	लि. क.-पं. गोकुलसुन्दर।
५०	६५६०	आलोयननी विधि		१८वीं	५	प्रथम पत्र अप्राप्त।
५१	८४२६(२२)	ओलोयनस्तवन		२०वीं	७३-८८	
५२	६५५२	आषाढभूति चौपई		१८७४	६	लि. क.-ऋषि कर्मचंद। लि. स्था.-विक्रमपुर।
५३	१००५२(६)	आषाढभूतिजीरो पांचढालियो		१८६७	११७-१२३	
५४	१०१८६(३)	आसोरेटना दूहा		१८५०	७३-७७	
५५	६००६	इलापुत्र चौपई		१८वीं	५	
५६	६०३४	उत्तराध्ययनकथा		१७८१	६०	
५७	६७०३	उपकेवागच्छसारांश	धनसार	१६२५	६	लि. क.-वाग्देव सुन्दर। लि. स्था.-राजलदेसर।
५८	८४२६(८)	उपाध्यायचर्यवृंदन		२०वीं	४७, ४८	
५९	१०१८० (७३)	ऋषभजिनस्तव		१६वीं	२२७-२२८	
६०	८४००(३६)	ऋषभदेवगीत	समरचंद्रसूरि	,,	८१वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	८४०० (१६)	ऋषभदेवीके गीत		१६वीं	५८-६०	लि. क.-हंसमुन्दर, देणोर मध्ये।
६२	६७०२	ऋषभनाथको स्तवन		१६०३	३१	खण्डित।
६३	६८६१ (१०)	ऋषभस्वामीस्तवन		२०वीं	३५वां	
६४	६१२७ (३)	ऐकलवारहरी बाढालारी वात		१६वीं	३४-५०	लि. क.-नाथू व्यास
६५	८३२५	औषधिसंग्रह		१७वीं	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क.-
६६	६२६३	कक्काबत्ती		१८वीं	२२	छत्रतिलकः लि. स्या.-मुखेडा।
६७	८७०४ (१)	कवीरके पद		१८४६	१	लि. क.-भोजजी पोकरणा,
६८	६८३२	कवीरजीकी वाणी	कवीरदास	१८१६	१०६	जोधपुर।
६९	८५५६ (२)	कवीरजीकी वाणी साखी आवि		१८५५	४-६६	गुटका, जिसमें मुन्दरदास कृत
७०	६६५६ (१)	कवीरजीकी साखी	"	१६वीं	८	ज्ञानसमुद्र भी है।
७१	८५०१ (५)	कवीरजीकी अंग	"	१८वीं	२३४-२८१	जीर्ण गुटका।
७२	८५६१ (१)	कवीरजीकी कृत	"	१६ वीं	१५-६६	प्रथम पत्र अप्राप्त।
७३	६७१८	कवीरवाणी	"	"	३४४	अन्तमें साधोकी आरतीके १८
७४	६७३४	कवीरसाहबको ग्रन्थ	"	१८४८	६६	पत्र है।
७५	८५६२ (६)	कमलकुंवर बाईरो गीत	"		७३-७४	लि. क.-मानदास साधु।
७६	८८३४	कमलावतीरास	विजयभद्र	१७वीं	३	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	८६०८(४)	कयवन्ता चौपई	जयरंग	१८६८	७-६७	लि. क.-रूपचंद । लि. स्था.-रतनाम ।
७८	८६७६	"	"	१६२८	३७	लि. क.-ध्यारचंद ।
७९	१००५५	कयवन्ताजोरी चौपई	सांमलदास	२०वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
८०	८०५०	कर्मनी बात		१८७४	२२	लि. क.-प्राणविजय ।
८१	६८१५	कर्मविपाक	मतिशेखर	१७६०	२	
८२	८८४३	करगडु चौपई		१७वीं	१०	
८३	१०१८६(४)	करणतु आख्यान		१८५०	७८-११३	
८४	१००५१ (१२)	करमसज्झाय		१८८५	१३३-१३४	
८५	८७४७(४)	करुणावत्तीसी	माधोदास	१६वीं	२०-२३	
८६	१०५६०(१)	कल्पवृक्षदानरी विगत		१७७६	१, २	लि. क.-लखाजी ।
८	७६१६	कल्पसूत्र सदबार्थ		१७७६	११६	लि. स्था.-नावा ।
८८	६६७६	कल्पसूत्र दवार्थ		१८वीं	१६	लि. क.-हर्षचंद ।
८९	६६६६	कल्पसूत्रभाषा		१८८३	१००	
९०	१०५१०	कल्पसूत्रभाषा		१७वीं	१२४	
९१	६७८३	कल्पसूत्रभाषावृत्ति	लक्ष्मीवल्लभ	१८१७	२५०	पत्र सं: १-५ अप्राप्त । लि. क.हंससुन्दर । लि. स्था.- वेगम बाजार, मुसाया तटे ।
९२	७८६१	कल्याणमन्दिरस्तोत्र बालाबोध	कुमुदचंद्राचार्य, अपर नाम सिद्धसेनाचार्य	१६५३	६-२३	लि. क. होरा साधवी ।

क्रमिक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३	६७३२ (१)	कायापाञ्जी	कबीर	१६वीं	१-३	अन्तर्मे पृ. १११ तक पद छप्य आदि हैं।
६४	६६६३ (२)	किशनबावनी	किशन	१६वीं	३६-५२	प्रभु. अडाणजी सेवापंथी। लि. क.-भञ्जूराम
६५	६५१३	श्रीमिया शहावतको अनुवाद	यू. मुहम्मद गजाली	१६वीं	१७६	
६६	७६६१ (७)	कृपालीस्तोत्र		१६१५	४०, ४१	
६७	१०६६० (२)	कृपासिंधु किसनहरोपदमाला		१६वीं	५-८	
६८	१०१८६ (६)	कृष्णचरित्र		१८५०	१४६-१५७	
६९	६१४४	कृष्णस्वमणीरी वेली	प्रथोराज	१७४७	३२	कल्पवल्ली टीका। लि. क.-मुनि महेसदास। लि. क.-धर्मसुन्दर। लि. स्था.-मेड़ता।
१००	८२५३	" "	"	१८००	४०	भूलसे पत्र सं. १२के पश्चात् १४ लिखित है। चित्र संख्या ६४. लि. क.-सवाईराम मेव। र. का १६५६। लि. क.-हरि-विजय, बम्बई। लि. क.-नंदराम व्यास, उदयपुर।
१०१	६२५२ (१)	" "	"	१७७४	१-१८	
१०२	६४२० (१)	कृष्णस्वमिणी वेली सचित्र			१३१	
१०३	८६३१	कोकमंजरी	आनंद	१८३२	२५	
१०४	८२०७	कोकशास्त्र	नरबद	१६७६	८६	
१०५	६०८६	कोकशास्त्रभाषा	आनंद	१६वीं	४०	
१०६	६०५२ (१)	कोकसार	आनंद	१६१४	६-२३	
१०७	६०५४ (४)	कोकसार		१८१०	१-२१	
१०८	६७३० (१)	कोकसार	आनंद कवि	१८२१	१-४५	
१०९	१००५ (१३)	खंदग चौडालियो		१६वीं	३१-३८	लि. क.-ऋषि दयाराम।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान - राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
११०	८४२२ (१८)	हिमावृत्तीसी	समयसुन्दर	१८वीं	८०-८२	अपर नाम फल ज्ञानिका लिखित
१११	८४६३	खेत्रसमाप्त		१७वीं	८	ह। लि.क -पं. कमलविधान
११२	८४६४	ग्रहणवारफल		१८३३	१०	अपूर्ण
११३	७६०१	ग्रहलाघवटीका		१८६३	३६	"
११४	८६६७	गजानन भजनावली बही	महावीराचार्य	१६वीं	४७	"
११५	८४६३	गणितसारसंग्रहभाषा		१६२४	१२७	"
११६	८४६४	" "		१६२५	१०२	भाषाकार अमीचंद
११७	१०२०६	गीताभाषा	"	२०वीं	१४६	अपूर्ण
११८	८५६१ (२)	गीतामाहात्म्यभाषा		१७५४	६६-१०४	लि.क.-रूपदास, गरीबदासशिष्य
११९	८७७६	गीतद्वारासी		१६वीं	२	
१२०	८८६१ (११)	गुणमञ्जरी		२०वीं	३६-४१	
१२१	८५३५	गुणावलीरी चउपई		१८२४	१५	लि. क.-रामचंद्र ।
१२२	८४०० (६)	गुरुगीत	पद्मचंद सूरि		३७, ३८	लि. स्था.-सादडी ।
१२३	१०१८० (७०)	गोडी पारसस्तवन		१६वीं	२२३वां	र. क. १७७५ ।
१२४	१०१८० (७२)	गोडीसी[स्त]व		"	२२७वां	
१२५	८४०० (४०)	गौडीजी गीत	देवीचंद	"	८५-८७	
१२६	१०१८० (६)	गौडी पादर्वनाथछंद		"	२८-३०	
१२७	८४०० (१५)	गौडी पादर्वनाथस्तवन		"	४५-५२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	८१६०	गौड़ीपाइर्वनाथ	कुशललाम	"	६	
१२९	१०१८० (८)	गौड़ीपाइर्वनाथस्तवन		१९वीं	२८वां	
१३०	१०१८० (६०)	गौड़ीपाइर्वनाथस्तवन		"	१८१-१८६	
१३१	१०२४८ (६)	गौड़ीपाइर्वनाथस्तवन		१८२२	६४-६६	
१३२	६४६०	गौतमगाथा		१८१०	१२५	पत्रसंख्या १-१३ तक अप्राप्त ।
१३३	१००५१ (७)	गौतमजीरो वीनती		१८८५	११३वां	
१३४	८४२२ (४०)	गौतमजीरो स्वाध्याय		१८वीं	१२५वां	लि. क.-रामचंद्र ।
१३५	८२४३ (२)	गौतम दीपालिकास्तवनम्		१७वीं	५	
१३६	८१५४	गौतमपृच्छा		१८वीं	६	लि. क.-मानसिंह ऋषि ।
१३७	१००५६ (१)	" "		१६वीं	१-४	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१३८	१०१८० (४१)	" "		१९वीं	१११-११६	अपूर्ण ।
१३९	१०६५०	" "		१८३४	६६	लि. क.-मुनि कुशलविजै, मुनि हेतुविजयशिष्य । लि. स्था.-स्तंभतीर्थ ।
१४०	८१५५ बी.	गौतमपृच्छाके सौ बोल	मुधाभूषण	१९वीं	११	
१४१	१०२४८ (४)	गौतमपृच्छाचौपाई		१८१२	४२-४६	
१४२	६०१६	गौतमपृच्छा बालावबोध		१९वीं	३८	
१४३	८४२८ (६)	गौतमरास		२०वीं	६४-६६	
१४४	६६१३	" "	विजयभद्रसूरि	१९वीं	१०	लि. क. प्रेमसागर ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	८४२२ (११)	चन्दणवालासम्भाय	अजितदेवसूरि	१८वीं	५३-५७	
१६६	८५६२ (१२)	चन्दनमलयागिरि रा दूहा	मोहनविजय	१७६५	११५-१३१	लि. क.-लक्ष्मीविजय ।
१६७	७८८०	चन्दरास		१८११	७३	लि. स्था.-सूरत ।
१६८	१००१५	"		१७७३	७०	प्रथम पांच पत्र अप्रान्त ।
१६९	८४६६	चरणदासजीरो सरोधो	चरणदास	१८वीं	२८	लि. स्था.-रामपुरा, कोटा ।
१७०	८४२६ (१२)	चारित्र्यचैत्यवंद		२०वीं	५२-५३	
१७१	८३३४	चित्रसेनपद्मावती चौपई	रामविजय, दयासिंहमुनिशिष्य	१६वीं	३०	र. का. १८१४ ।
१७२	८४२६ (२७)	चैत्यवंदन		२०वीं	११० वां	
१७३	८४२६ (१४)	"		"	५४-५८	
१७४	६६०७	चैत्यवंदनसूत्रतो बालावबोध		१८वीं	१००	अपूर्ण ।
१७५	८१८२	चौबीसजिनस्तव		"	१०	लि. क.-माणिकविजय ।
१७६	६१५२ (३)	चौबीसजिनस्तवन		१६००	५६-६०	
१७७	१०१८० (६३)	चौबीसतीर्थकर पंचबोलस्तवन		१६वीं	१६७-१६६	
१७८	१००५२ (८)	चौबीसतीर्थकर स्तवन	देवीचंद्राधि	१८६७	१३१ वां	अपूर्ण ।
१७९	८४०० (४१)	चौबीसो	आनंदधन महाराज	१६ वीं	८७-८६	*
१८०	६६७२	चौबीसोसूत्रार्थो		"	३६	
१८१	८५६२ (८)	चौहानपू थीराजरो छंद			७६-७६	
१८२	८३१३	छठो भुवनद्वारवर्णन		१८७४	१६	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	१०६८० (३)	छत्तीस कारखानाका नाम		१६वीं	८-६	
१८४	१०१८० (२८)	छन्नू जितनामस्तवन		१८वीं	६६वां	
१८५	६२५६	छठ्ठकाय आदि		१८वीं	१३	जीर्ण गुटका ।
१८६	८२५६ (१)	छोतमजीकी जखड़ी		१८वीं	१-४	
१८७	६२५४ (५)	जगदम्बरी नीसाणी		१८वीं	१-८	
१८८	६४६७	जगावधी		१८वीं	६	
१८९	८६६६	जन्मपत्रिकागणितक्रमभाषा		१७७२	१५	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. क.-बुधसुन्दर । लि. क.-अमृतसागरगणि । लि. स्था.-श्रीमंडपिका वन्दर ।
१९०	८३३७	जन्मपत्रीनिर्माणविधि		२०वीं	८	
१९१	८५६२ (६)	जनम वत्तीसी	भगतराम पचोली मनरूप	१७६५	७८-६१	र. का. १७६५ । *
१९२	७६३७	जम्बूचरित्र		१८६६	३६	लि. क.-रंगविजय । लि. स्था.-भावगढ़ । र. स्था. नाहरगढ़नगर ।
१९३	८५५४	" "		१८२६	२६	लि. क.-सुजाणकृषि ।
१९४	८४५८	जयपुरराजाओंकी वंशावली		१६वीं	२७२	आदिके ३६ पत्र तथा पत्र सं. ५५ से ५८ अप्राप्त ।
१९५	१०१८६ (१)	जलालगहाणीरी बात		१८५३	१-६३	
१९६	१०६७५ (३)	" "		१८११	५७-८२	'पोथी दाउदखोंकी नकल ।'

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६७	८५६२ (५)	जसोत्तसिंह भाला भालजीरो गीत	भीमजी आढा		७१-७२	
१६८	८२८६	जाम्बवतीचौपई	सूरसागर	१८वीं	१०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१६९	१०१८०	जिनगीत		१९वीं	१०६, ११०	
२००	(४०)	जिनरस		१८७५	१०	लि. क.—अखैचंदश्रुति । लि. स्थान— स्यजैहनाबाद (शाहजहानाबाद) ।
२०१	६५२२ (५)	जिनराजचैत्यवंदन		१७६८	४	
२०२	६५७३	जिनरामायण		१८वीं	१३४	अपूर्ण ।
२०३	८४०० (३२)	जिनस्तवन	पोशचंद	१९वीं	७३-७५	
२०४	८४२२ (१७)	" "		१९वीं	७६-८०	
२०५	१०२४८	" "		१८१३	१२६-१३०	
२०६	(१७)	जिनस्तुति	कनककीर्ति	१९वीं	६६-७०	
२०७	८४०० (२७)	जिनस्तुति श्रीर गौड़ीपादवनाथस्तवन		"	१०५-१०६	
२०८	६८६१ (८)	जिनस्तोत्र		२०वीं	३२-३३	
२०९	८०४६	जिनसूक्तीमाला		१८वीं	६	
२१०	१०२४८	जिसलमेरमंडण पादवनाथस्तवन		१८१२	६८-७०	
	(१२)					
२११	८४२२	जीवकायासज्झाय		१८वीं	६७-६८	
२१२	८४०३ (२)	जीवविचारप्रकरण		२०वीं	२१-५१	सबालावबोध ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६५२२ (१)	जीवविचारप्रकरण		१७६८	७	लि. क.-माणिक्यचंद्र ।
२१४	६५२२ (६)	"		१८वीं	६-८	लि. क.-मुनि माणिक्यचंद्र ।
२१५	६६३८	जैनतीर्थंकरपूजापद्धति		"	७-३८	अपूर्ण ।
२१६	८४०३ (१०)	जैनतीर्थवर्णन		२०वीं	१००, १०१	
२१७	८५०८	जैनकृतक		१८६५	५३	
२१८	६२५७ (४)	जैनशतम्		१८वीं	१-४	
२१९	८१७५	जैनसंस्कारविधि		"	२३	
२२०	६६०८	जैनसंप्रदायचर्चा		"	१०	
२२१	१००५१	डांडणजीरो तवन		१८८५	१३८-१३९	
	(१५)					
२२२	१०१८०	ढालरागगीतसंग्रह		१९वीं	१६३-१७८	
	(५७)					
२२३	७८६२	ढालसागर हरिवंशप्रबन्ध	गुणसागर	"	७१	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२२४	७९०६	"	"	१८४७	४०	लि. क.-शैलसौभाग्य ।
						लि. स्था.-नारायणगढ़ ।
२२५	७९१४	"	"	१९वीं	३६	
२२६	७९२१	"	"	१७९६	१३०	लि. क.-कुशललाभ ।
२२७	८२६६	ढोलामरवणचौपई		१८वीं	१९	
२२८	८४२६	ढोलामरवणरीचउपई		१६१३	२५	लि. क.-पं. दयाशेखर ।
२२९	६०५२ (२)	"	कुशललाभ	१८०२	१-५९	लि. स्था.-जावदग्राम महाराणा जगतसिंहजीराज्ये ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३०	१०१८६ (२)	ढोलामारवणरी वात		१८५३	१-७३	लि. क.-नंदराम ।
२३१	१०६६० (१)	ढोलामारु, सचित्र		६२	६२	चित्र सं. ६८ ।
२३२	६-५२ (५)	ढोलामारुरी वात		१८वीं	१-३७	लि. क.-मित्रराम भट्ट दसोरा ।
२३३	८४२६ (१३)	तपचैत्यवंदन		२०वीं	५३-५४	लि. क.-हुकमचंद ।
२३४	१०१८० (७१)	तमाकूनीत		१८वीं	२२४-२२६	
२३५	१०१८० (१२)	तिथिनक्षत्रविचार		"	३३-३६	
२३६	८४२२ (२६)	तीर्थकरतवन	साधुविजय	१८वीं	६५-६६	
२३७	८१८३ (३)	तीर्थमाला	समयसुन्दर	"	१५-१६	
२३८	८४२८ (७)	तीर्थविली	"	२०वीं	६६-६८	
२३९	८४०० (२४)	तीर्थधमाल	"	१६वीं	६५-६६	
२४०	८०६७	तेतलीपुत्र मुनीसचरित्र	देवश्रानंद, ज्ञानचंद्रशिल्प	१८वीं	६	
२४१	१०१८० (६८)	तेतलीपुत्राध्ययन		१६वीं	२१५-२१७	
२४२	१०१८० (६४)	तेरह काठिया		"	१६६-२००	
२४३	१०२४८ (३)	तेरह काठियास्वाध्याय		१८१२	४०-४२	तेरहवीं ढाल अपूर्ण है ।
२४४	८०६०	तेरह ढालसाधुवंदना		१८वीं	८	
२४५	१००५० (८)	तेवीसपदवीरी स्तवन		१६वीं	३६-३८	
२४६	८४२२ (२३)	शंभणपारसनाथतवन		१८वीं	८६-८७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४७	१०१८० (४८)	शंभणपारसस्तवन	कनकक्रीति जिणचंदशिष्य	१६वीं	१४१-१४२	अंतर्मे "देसी बंगालानी" है।
२४८	१०१८० (५५)	द्रव्यादिधिचार		"	१५२-१५७	
२४९	७६३५	द्रौपदीकथा		१७वीं	१६	अपूर्ण।
२५०	८७२२	द्रौपदीचउपई		१६५२	११	*
२५१	७६०३	द्रौपदीचरित्र		१८वीं	४१	र. स्था. जैसलमेर।
२५२	८४०३ (३)	दण्डक	अभयधर्म	२०वीं	५१-६८	
२५३	८४२६ (१०)	दरसनचैत्यवंदन		"	५०-५१	
२५४	६५६५	दशदूढान्तविस्तर		१८वीं	५	र. का.-१५७६।
२५५	१००५२ (१६)	दशभवस्तुति		१८६७	१३६-१४१	
२५६	८१७३	दशविध यतिधर्मसंज्ञाय	सुखसागर कवि	१८०६	१३	
२५७	१०१८० (६६)	दशवैकालिकसूत्र		१६वीं	२०१-२१२	
२५८	१००५० (१४)	दशार्णभद्रराजषिचौडालियो		"	४०-४२	
२५९	८४०० (२२)	दादागीत	समयमुन्दर	"	६३वां	
२६०	८४०० (१०)	दादाजिनकुशलसूरिगीत		"	३८-३९	
२६१	८४०० (१२)	दादाजिनदत्तसूरिगीत		"	४१-४२	
२६२	८४०० (१४)	दादाजीगीत		"	४२वां	
२६३	६४३० (७)	दादुजीकी वाणी		१८५८	१-२३३	लि. क.- भागीतदास, मारवाड़ मध्ये।

राजस्थान ग्रन्थविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६४	८५६४ (१)	दादूजीको अंग, सचित्र	जयंतीदाम	१६वीं	१-५१	चित्र सं. १३।
२६५	८५०१ (३)	दादूजीको कृत		१८वीं	१४६-१६५	अपूर्ण।
२६६	८५०१ (४)	दादूदयालजीको ग्रंथ		"	१६५-२३३	
२६७	८४२८ (१७)	दादूजी महाराजरा तवन		२०वीं	१४२-१४५	
२६८	८४२८ (२)	दादूजीरो तवन		"	१ ला	लि. क. व्यास अमरकोति ।
२६९	८४०० (२५)	दानगीत	समयसुन्दर	१६वीं	६५-६७	
२७०	८४४८ (५)	दानलीला		"	२४-२८	
२७१	६०२७	दान-शील-तप-भावना-संवाद		१६६६	५	
२७२	८१८३ (१)	दानसीलरो चौढालियो		१८वीं	१-७	
२७३	१००५२ (४)	"		१८६७	१०५-१२५	
२७४	६५०१	दीपमालिका कथा		१८वीं	११	# प्रथम पत्र अप्राप्त। " अपूर्ण। लि. क. दलसुफ[ख]राम।
२७५	१०१८०	दुहा, पद आदि		१६वीं	१५८-१६२	
२७६	६२५२ (४)	दुहा-सोरठा किसनियारा		१८वीं	३-४	
२७७	६६४४	दृष्टान्तशतक		१६वीं	४०	
२७८	१००१२	दृष्टान्तसंग्रह		२०वीं	१८	
२७९	६५३६	देवनामावली	समयसुन्दर	१८वीं	७९	
२८०	८०४३	देववन्दन		२०वीं	१३	
२८१	८४२९	देववादाशकस्तव		"	६७-६८	
	(१८)					
२८२	८१८३ (४)	देसन्तरीछन्द		१८वीं	१६-२४	

क्रमांक	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	८४५५	देसन्तरीछन्द	समयसुन्दर	१६वीं	४७	लि. क. ऋषि दयाचंद ।
२८४	८६४०	दोषावली		१६०३	६	लि. स्या. खाचरोद ।
२८५	६४५६	"		१६४८	४	लि. क. ऋषि प्रेमचंद ।
२८६	८८४०	धनदत्तचउपई		१७२४	१४	लि. स्या. कलकत्ता ।
२८८	१०१८० (२४)	धनाऋषिसंज्ञाय	मतिसार	१६वीं	६३वां	लि. क. दीपतिविजय, अमृत- गणेशिष्य ।
२८८	१००५२ (५)	"		१८६७	११५-११७	
२८९	१००५१ (११)	धनाकाकादिवरी संज्ञाय		१८८५	१३१-१३३	लि. क. लिप्यमीचंद ऋषि ।
२९०	८८४१	धनाराम		१८वीं	१५	लि. स्या. मांदपुरी ।
२९१	१०२४८ (१०)	धनारिषरी संज्ञाय, सचित्र	धनशासलभद्रमहाचरित्रचौपई धनशासलभद्रमुनिवरस्वाध्याय धनशासलभद्रचउपई धमाल धर्मचर्चा धर्मदत्तरी चौपई	१८१२	६६-६७	र. का. १७०२ । चित्र सं. १ ।
२९२	१००५१ (२)	धनशासलभद्रमहाचरित्रचौपई		१८८५	६५-१०७	लि. क. लक्ष्मीचंद ऋषि ।
२९३	१०१८० (३)	धनशासलभद्रमुनिवरस्वाध्याय		१६वीं	२३-२४	
२९४	६६४१	धनशासलभद्रचउपई		१७३१	३२	पत्र सं. १, २ अप्राप्त ।
२९५	१०१८० (१४)	धमाल		१६वीं	४२वां	
२९६	७६८६	धर्मचर्चा		१८३०	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२९७	६५१२	धर्मदत्तरी चौपई		१८वीं	५६	अपूर्ण ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	८२६८	धर्मबुद्धिचौपाई	लालचंद	१८०६	१७	र. का. १७४२ ।
२६९	८३३८	धर्मसारधर्मबुद्धिचौपाई	लाभवर्द्धन, शांतिहर्षगणिशिल्प	१८५९	२५	
३००	८५००	ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	१९०३	७४	
३०१	८५६१ (४)	"	"		१२४-१३७	आदिके १४ पत्र अप्राप्त ।
३०२	८१२३	नंदबहोत्तरी	"	२०वीं	६	र. का. १८७६ ।
३०३	९२५८	नखशिखवर्णन	बलिभद्र	१८६५	१७	र. स्था. कुचामण ।
३०४	९८३६ (२)	नरसीजीका माहेरा		१९वीं	५१	लि. क. शोनारायण ।
३०५	८८३९	नलदवदतीचौपाई	समयसुन्दर	१७०४	३४	लि. स्था. राजगढ सवाई
३०६	१०१०० (४५)	नवकारछन्द		१९वीं	१३४-१३५	वकतावरसिंहजीराज्ये ।
३०७	१००५१ (३)	नवकारमंत्रतवन		१८८५	१०७-१०८	लि. स्था. उदयपुर ।
३०८	१००५१ (५)	"		"	१११-११२	
३०९	७९१९	नवकाररास	तिलोकचंद	१८९१	५७	लि. क. तिलोकचंद ।
३१०	७९४१	"		१९वीं	७७	र. स्था. उज्जैन ।
३११	७९७४	"		१७वीं	४	र. का. १८५७ ।
३१२	८४२८ (५)	"		२०वीं	६१-६४	
३१३	१०२४८ (७)	नवकारस्तवन		१८१२	५६-५९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१४	१००५२ (१२)	नवकारस्तवन	दीपविजय कवि	१८६७	१३४ वां	
३१५	६४६४	नवतत्त्व		१८वीं	५	
३१६	१००५२(२)	नवतत्त्वगाथाबालावबोध		१८६७	३४-६८	
३१७	६५१६	नवतत्त्वप्रकरण, बालावबोध		१८वीं	१२	लि. क. माणिक्यचंद्र मुनि ।
३१८	८४०३ (१)	नवतत्त्वबालावबोध		२०वीं	१-२१	
३१९	६८३३	" "		१८३६	४६	
३२०	८४२८ (१५)	नवपद		२०वीं	१३०-१४०	लि. क. गंगाराम साहजी ।
३२१	८४२६ (१६)	नवपदआरती		"	६१-६४	लि. स्था. बोंलीनगर ।
३२२	८४०३ (६)	नवपदकलशपूजाविधि		"	८३-६४	लि. क. हुकमचंद ।
३२३	६८६३	नवपदपूजा		१६२४	१७३	लि. क. पं. सवाईसागर ।
३२४	१०२४६	"		१६वीं	१५१	लि. स्था. देपालनगर मालवदेश ।
३२५	८१७०	नवबोलकी चर्चा		"	१०	लि. स्था. मुंदवचनगर ।
३२६	८०५८	नवरत्नकलश		१८७४	६	
३२७	१०१८० (२०)	नवलनागरी		१६वीं	५६ वां	
३२८	१०२४८ (१३)	नाकोडापाश्वर्चनाथस्तवन		१८१२	७० वां	
३२९	८५१५	नागराजपिङ्गल		१६२३	२	लि. क. रामदास कबीरपंथी ।*
३३०	१०१८० (५१)	नागलानी सिम्भय		१६वीं	१४५-१४७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३१	८४०६	नासिकेतकथा		१८६८	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३३२	६४२० (२)	" " सचित्र		१८२४	१३२-१६५	चित्र सं. १८ ।
३३३	६८४७	न	भतुं हरि	१७६६	६	लि. क. मालीदेवी ।
३३४	६८२६ (१)	नीतिशतक सट्बाथ		१६वीं	१-२५	लि. क. रूपचंद ।
३३५	१०६७५ (६)	नीसाणी आदि		१७६५	१२	
३३६	८५६२ (१४)	नीसाणी भागरी		१८६५	१३६-१३६	
३३७	८४२२ (३३)	नेमजीतवन	कल्याणसागर	१८वीं	१०५-१०६	
३३८	१००५१	नेमजीरो तवन		१८८५	१४०-१४२	
३३९	१००५१ (१८)	नेमजीरो वारामास्यो		"	१४२-१४४	
३४०	८४२६ (१५)	नेमिजिनगीत		२०वीं	५८-६१	
३४१	८४०० (२१)	नेमिनाथगीत		१६वीं	६२-६३	
३४२	८४०० (२६)	"	अजीतसागर	"	६७-६६	
३४३	६६२२	नेमिनाथस्तव		१७७६	१०	लि. क. भगवान चैला ।
३४४	१०१८० (५८)	नेमिनाथस्तवन		१६वीं	१७६	
३४५	१००४६	नेमिरास		"	११०	
३४६	८१३६	नेमीश्वरराजमतीरास		१८४३	६	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३४७	६६४८	प्रकृतिनो विचार	समयसुन्दर	१८४७	१२	लि. स्था. विक्रमपुर ।
३४८	८८३५	प्रत्येकबुद्धचौपई		१७००	२६	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
						लि. क. विनयराज मुनि शिष्य सकलहर्ष पठनार्थ ।

क्रमांक	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४६	६७१६	प्रतापसिंहरी वार्ता		१६वीं	७०	प्रथम दो पत्र अप्राप्त ।
३५०	८३५२	प्रश्नोत्तरखोल		"	१३	लि. क. पुष्कर ऋषि ।
३५१	८५६२(११)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१७६५	६६-११५	लि. स्या. वालोतरा ।
३५२	६६५६	" "	"	१६वीं	२४	लि. क. गुलावराय हरिदासोत् ।
३५३	८०८६	प्रास्ताविकश्लोकसूत्रार्थ		१८वीं	१०	अपूर्ण ।
३५४	१०६७८	प्रास्ताविकसञ्ज्ञाय		१६वीं	५२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३५५	८३५८	प्रियमलक चौपाई	समयसुन्दर	१६वीं	७	जीर्णप्रति, कतिपय पत्र त्रुटित ।
३५६	८५१०	प्रेमरत्नाकर	भैरतरतनपालके लिये देवी- वास कृत	१६२०	१७	र. का. १६७२ ।
३५७	१०१८० (६२)	पञ्चकल्याणक		१६वीं	१६१-१६७	र. स्या. मेड़ता ।
३५८	१०१८० (३८)	पञ्चकारणभित वीरजिनस्तवन		"	६१-६४	लि. क. रामदास कवीरपंथी । *
३५९	८४२२(००)	पञ्चतीर्थस्तवन	लावण्यसमय मृति	१८वीं	८३-८४	लि. क. क्षमाधोर ।
३६०	६७०७	पञ्चपरमेष्ठीनमस्कार		१७७१	८	लि. स्या. सूरतचन्दर ।
३६१	८४२६(१६)	पञ्चरात्र स्तव		२०वीं	६८-६९	
३६२	८५६२(२)	पञ्चसहेलीरा व्रुहा	छोहल कवि	१७७५	३६-४४	र. का. १५७५ ।
						लि. क. गुलावराय, हरिदासोत् ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६३	८१३५	पञ्चसाधूनी चौपदी	कान्होजी [कीर्तिसुन्दर]	१७८६	१०	र. का. १७५६ । र. स्था. जैतारण । लि. क. धर्मसुन्दर ।
३६४	६५६७	पञ्चवेदकी चउपई		१८८४	२०	लि. क. हर्षचंद । लि. स्था. बरडावदा ।
३६५	८४२८ (१६)	पञ्चसंगारी शुद्ध		२०वीं	१४०-१४२	
३६६	८०५५	पट्टीपहाड़ा		१६१४	१४	
३६७	८४२२ (१६)	पद्मावतीसज्जाय		"	८२-८३	
३६८	६०२२	पद्मिनीचरित्र	लब्धोदय	१८३०	३५	
३६९	८४०० (१७)	पद		१६वीं	५२-५६	
३७०	८४२६ (२३)	"		२०वीं	८६-९५	
३७१	६५२२ (३)	"		१७६८	२	
३७२	६५२२ (८)	"		१८वीं	५ वां	
३७३	१०१८०	"		१६वीं	१४२-१४३	
३७४	(४६)	पदमणीचौपई	लब्धोदय गणि समयसुन्दर	"	१-७	
३७५	६०५२ (५)	पद्मावती		१८वीं	५७-६०	
३७६	८१८३ (६)	पदसंग्रह		२०वीं	१०७-१०९	
३७७	६२५७ (१)	"		१६वीं	५२	पत्र संख्या १-१० अप्राप्त ।
३७८	६२५६	"		१८वीं	१-८१	अपूर्ण ।
३७९	६२८०	पन्दरसी विद्या, सचित्र		"	६६	चित्र सं. ८५ ।
३८०	८७४८ (१)	पनरसी विद्या भोजचरित्रकथा	भवानीदास व्यास	१८४६	१-२६	लि. क. ऋषभकीर्ति । लि. स्था. दौलतगढ़ ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	६७६०	परदेशीराजाकी चौपाई	जयमल	१७४७	२१	लि. क. नरोत्तमदास ।
३८२	७६४३	परदेशीसंधि	जयमल ऋषि	१८५१	१४	लि. क. सूर्यसौभाग्य ।
३८३	६१५२ (४)	परदेशीराजारी चौपाई		१६०५	६०-६६	लि. स्या. नारायणगढ़ ।
३८४	१०१८० (६५)	परमारथहिंडोलिना		१६वीं	२००-२०१	लि. क. रामधन ।
३८५	१०४२४	परलीविचार		२०वीं	४	
३८६	१०६७५	पत्र		१६वीं	६	प्रथम पत्र अप्राप्त । अपूर्ण ।
३८७	१००५१ (४)	पांचतीरथीतवन	लाभवर्धन	१८८५	१०६-१११	पुरषकी ओरसे स्त्रीके नाम ।
३८८	८२६७	पांडवचरितचौपाई		१८५०	४२	लि. स्या. श्रीकानेर ।
३८९	८८२३	पादूरा दूहा		१६वीं	५	
३९०	१००५२ (११)	पाशर्वनाथजिनस्तवन		१८६७	१३३ वां	
३९१	१००५२ (१५)	पाशर्वजिनस्तवन		"	१३८-१३९	
३९२	१०१८० (३३)	" "		१६वीं	८२-८४	
३९३	८४२६ (२०)	पाशर्वजिनस्तुति		२०वीं	७०-७१	
३९४	६२५५ (१०)	पाशर्वनाथकथा		१८वीं	४२-४८	लि. क. विजयराम ।
३९५	८४०० (११)	पाशर्वनाथगीत		१६वीं	३८-४१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६६	८४०० (२८)	पार्श्वनाथ गीत	जिणचंद	१६वीं	७०-७१	
३६७	८४०० (५)	पार्श्वनाथनीशाणी		"	११-१६	
३६८	१०१८० (६)	पार्श्वनाथनो स्तवन		"	२७ वां	
३६९	१०१८० (१२)	"		"	४०-४१	
४००	१००५२ (२२)	पार्श्वनाथस्तवन		१८६७	१७०-१७६	
४०१	१०१८० (७)	पार्श्वनाथस्तुति		"	२७ वां	
४०२	८४३१	पार्श्वनाथस्तोत्रादिसंग्रह		"	२०	
४०३	१००५२ (१३)	पार्श्वप्रभुजीस्तवन		१८६७	१३५-१३६	
४०४	८४३१ (१)	पारसनाथकथा		१६वीं	१८-२०	
४०५	८४२२ (२४)	पारसनाथस्तवन		१८वीं	८७-८८	
४०६	८५६२ (१३)	पीपाजीरी चितावणी		१७६५	१३२-१३५	
४०७	८६६४	पुण्डरीककण्ठरीक रास	नारायण मुनि	१८वीं	४	
४०८	६८१०	पुण्यद्वत्तीसी	समयसुन्दर	"	६	
४०९	१०१८० (२३)	पुद्गलपरावर्तनो विचार		१६वीं	६२-६३	
४१०	६८६६ (६)	पुरुषोत्तमस्तोत्र	गोराचं	२०वीं	१२ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४११	८४०३ (७)	पूजापद	चंद कवि	२०वीं	६४-६५	
४१२	६२५१	पूरणमासीरी कथा	कवि चन्द वरदाई	१८वीं	४१	
४१३	१०१८६ (१)	पृथ्वीराजपवाड़ा	"	१६वीं	१-७०	लि. क. मोडाराम । जीर्ण प्रति ।
४१४	७८७७	पृथ्वीराजरासो	"	१८०६	१०८	
४१५	६२०२	"	"	१८६१	११२	
४१६	६२३१	"	"	१६०३	७०	
४१७	६२६५	"	"	१८५३	५५	
४१८	६३३४	"	"	१८१२	४३	
४१९	६३३५	"	"	"	६१३-६२६	लि. क. जयकृष्ण मिश्र ।
४२०	८५६२ (१५)	फुटकर दूहा	"	१७६५	१३६-१४३	दोहा सं. ६२ ।
४२१	६२५२ (३)	फूलचितावणी		१८वीं	३	
४२२	१०६८० (१)	"		१६वीं	१-४	
४२३	१०४७६	फूलजी फूलमतीरी वात, सचित्र		"	५३	चित्र सं. ५३ प्रकीर्ण ।
४२४	६१२७ (१)	फलजी फूलवतीरी वात		"	१-१४	लि. क. नाथू व्यास ।
४२५	८४६८ (३)	फलीबाईकी परची		१८वीं	१६-२४	
४२६	८४०२ (४)	बड़ी नीतिना मांडला		२०वीं	५६ वां	
४२७	८८३१	बड़ी ब्रह्मचरी	समरसिंह	१७वीं	५	
४२८	८४२२ (६)	बड़ी नवकार		१८वीं	४२-५०	
४२९	८४२८ (१)	वत्तीसदोषसामायक		२०वीं	२	
४३०	१००५२ (७)	ब[ख] [न्धक] कुमारनी चौढालियो		१८६७	१२३-१३०	
४३१	८४२२ (२५)	वम्भणबाडस्तवन	कमलकलशसूरि	१८वीं	८८-८९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३२	६११७(१)	वल्लभाख्यान		२०वीं	१-२२	लि. क. सुरतराम चारण
४३३	८५६०(४)	वारहमासी		१८वीं	६२-६६	
४३४	६२५७	वारहभावना		१८वीं	४-५	
४३५	१०२४८(२)	" "		१६वीं	३६-४०	*
४३६	१०१६०	बोकाजीरा तमाशा		"	१२३	
४३७	६८६१(१६)	बोजुमंत्र		२०वीं	८२ वां	पत्रके दूसरी ओर केशो पंचोली-
४३८	८५६२(७)	वेदलाका गीत			७५ वां	का कवित्त है ।
४३९	६०५२(६)	भंवरगीतरा दोहरा		१६वीं	१-६	पत्र चिपके हुए और फटे हुए हैं ।
४४०	१००५१ (१६)	भंवरारी सज्जाय		१८वीं	१३६-१४०	*
४४१	८४६८(१)	भक्तविरदावली		१८वीं	१-४	प्रथम पत्र अप्राप्त *
४४२	८५६१(३)	भगतिभांवती ग्रंथ	अनन्तानंद		१०५-१२३	र. का. १६०६ ।
४४३	१०१८६(२)	भटवाड़ी		१६वीं	७१-७२	लि. क. रूपदास । गरीबदास शिष्य । *
४४४	८८१८	भडुलीग्रंथ		"	८	
४४५	८५०५(४)	भडुलीगर्भ		१६२७	१-१०	लि. क. रामदास कबीरपंथी ।
४४६	८६६५	भडुलीवाक्य	भडुक वि	१८वीं	६	

क्रमांक	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४७	८७४७ (२)	भडलीवायकसमयविचार	भडली	१८६५	२७-३३	अपूर्ण । #
४४८	१०१८० (३७)	भमरगीता		१६वीं	८८-८९	
४४९	८४९८ (५)	भरथरीउपदेश		१८वीं	२७-३०	
४५०	८५०१ (१)	भरथरीगोरखनाथसंवाद		"	१-८८	
४५१	१०६७५ (४)	भवानीका स्तोत्र		१८२३	८३-८४	
४५२	८५०३	भागवतभाषानुवाद		१८वीं	६-२४७	
४५३	१०६८० (४)	भावकुभावचिंतावली		१६वीं	२३-२९	
४५४	९५२१	भावनाविचार		१८वीं	३	
४५५	८५६२ (१)	भोगलपुराण		१७९४	१-३६	
४५६	८५०५ (१)	भोगुलप्रमाण		१९२३	१-१९	
४५७	९५२२ (७)	भौतज्ञानदृगपद	कनकसोम	१७६६	५	ग्यारवें स्कंधके ९वें अध्याय तक प्रति जीर्ण । अपूर्ण ।
४५८	९०२९	मंगलकलशफाग		१६वीं	८	
४५९	१००५२ (१९)	मंगलीक		१८९७	१५२-१५३	
४६०	१०१८० (५३)	मंडूकाध्ययन		१६वीं	१४९-१५०	
४६१	१०१८० (६९)	"		"	२२०-२२२	
४६२	८४२२ (२६)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वीं	८९-९१	
४५३	१०६८० (४)	भावकुभावचिंतावली	कनकसोम	१६वीं	२३-२९	लि. क. अलौराम । लि. क. रामदास कवीरपंथी । लि. क. ऋषि हेमराज । लि. स्या. पट्टनागर ।
४५४	९५२१	भावनाविचार		१८वीं	३	
४५५	८५६२ (१)	भोगलपुराण		१७९४	१-३६	
४५६	८५०५ (१)	भोगुलप्रमाण		१९२३	१-१९	
४५७	९५२२ (७)	भौतज्ञानदृगपद		१७६६	५	
४५८	९०२९	मंगलकलशफाग		१६वीं	८	
४५९	१००५२ (१९)	मंगलीक		१८९७	१५२-१५३	
४६०	१०१८० (५३)	मंडूकाध्ययन		१६वीं	१४९-१५०	
४६१	१०१८० (६९)	"		"	२२०-२२२	
४६२	८४२२ (२६)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वीं	८९-९१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६३	८४२२ (३४)	मगसी पारसनाथस्तवन	जिनहर्ष	१८वीं	१०६-१०८	लि. क. अमरसागर ।
४६४	८६६६	मच्छोदर चौपई		१७०२	१०	पत्र सं. २ अत्राप्त । र. स्था. बाड़मेर ।
४६५	७६४२	मणिपतिचरित्र		१६वीं	३५	अपूर्ण ।
४६६	८८२२	मदनशतक		१८वीं	६	लि. क. पं. ईसर ।
४६७	१०२५८	मधुमालती, सचित्र			६३	चि. सं. ५४ ।
४६८	१०४७७	मधुमालतीकी बात, सचित्र	चतुर्भुजदास गुणसागर		६	चित्र सं. १०, प्रकीर्ण ।
४६९	६०६२ (४)	मधुमालती चौपई		१८०२	१-७४	लि. स्था. जावद ।
४७०	८४२२	मनगुणतीसी		१८वीं	६१-६२	
४७१	(२७) ए.	मयणरेहा	मतिशेखर	"	२१	
४७२	७६३४	महावीरचरित्र, बालाबोध		१६वीं	१७	र. का. १५३७ ।*
४७३	६४६८	महावीरजीरो पारणो		२०वीं	१०६-११४	
४७४	८४२८ (१०)	महावीरजीरो स्तवन	देवीचंद	१८६७	१५३-१५४	
४७५	१००५२	(२०)				
४७६	८४००	महावीरपारणस्तवन		१८६४	६०-६१	लि. क. अखेराज पुत्र चिरंजी, पौत्र भोजराज ।
४७७	१००५०	महावीरपारणसिद्धाय		१६वीं	४२-४५	
४७८	(१५)					
४७९	८४२२ (१२)	महावीरस्तवन	"	१८वीं	५७-६३	
४८०	१०२४८	"		१८१३	१३०-१३४	
४८१	(१८)					

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७६	८४०२ (१)	महावीरस्तवन सार्थ		१६१६	१-४२	प्रथम पत्र अप्राप्त । र. का. सं. १७३३ । र. स्था. ईदलपुर । ढीकाकार-नयविजय ।
४८०	८४०० (३३)	महावीरस्वामीजीरा पारणा	पाशचंद	१६वीं	७५-७८	
४८१	८७६५	माधवानलकामकंदला		१७वीं	१४	
४८२	६०५२ (३)	" " चौपई	कुशललाम	१८०२	१-४१	
४८३	१०४७६	" " सचित्र			३५	र. का. सं. १६१६ । लि. स्था. जावद । चित्र सं. ३७ ।
४८४	१०६६० (२)	" " "		१८०७	६३-१०१	" "
४८५	६४६५	मानतुंग मानवतीकथा	मोहनविजय	१८७१	६	लि. क. हम्तरम (हिम्मतराम?)
४८६	७८८३	मानतुंग मानवतीचरित्र		१८१४	२३	लि. क. चंद्रसीभाय । लि. स्था. लघु सादड़ी ।
४८७	८८०७	मानतुंगमानवतीचौपई	अभयसोम	१८वीं	१०	र. का. १७२७ ।
४८८	८१०६	मानतुंगमानवतीरास	अनोपसिंह	१६१५	७	लि. क. सयमणी ।
४८९	८३४६	" " "	रूपविजय, मानविजयशिष्य	१८०३	४०	लि. स्था. उदरामसर । लि. क. धर्मसुन्दर, लवकसूरि शिष्य ।
४९०	१०१८६ (५)	मामा नरसीका माहेरा		१८५०	११४-१४६	
४९१	६७२१ (१)	मालदेवजीरो सगुण	राव मालदेवजी	१६वीं	१-४२	
४९२	१०१८० (१०)	सासवारती पूनिमनो विचार		"	३०, ३१	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६३	१०६८० (५)	मुरखावली		१६वीं	३०, ३१	
४६४	१०२४८ (१६)	मृगापुत्ररिविसंधि		१८१३	११५-१२६	
४६५	८१२१	मृगलोढानो चरित		१८२६	४	लि. क. फत्ता ।
४६६	७६६६	मृगावतीचौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	२२	लि. स्था. किशनगढ़ ।
४६७	८८२७	मृगावतीरास	"	"	५०	र. का. १६६४ । जीर्ण प्रति ।
४६८	७६०६	मेघकुमारचौपाई	मेलराजशिष्ट	१८वीं	५१	अपूर्ण ।
४६९	१००५१ (१०)	मेणरेहारी चौपाई		१८८५	११६-१३१	
५००	१००५४	मेतारिषरी सिङ्गाय		१६वीं	६८	प्रथम ६ पत्र अप्राप्त ।
५०१	८२८०	मेलक [प्रियमेलक] चौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	११	र. का. १६७२ ।
५०२	८५६२ (४)	मोकर्मसिंहजी सगतावरी गीत	भीमजी झाढा		७१ वां	र. स्था. मेड़ता ।
५०३	६०६२ (१)	मोरध्वज अष्टपदी		१६६१	१-७	* लि. क. मोहनकीर्ति ।
५०४	६८६१ (१३)	मौनएकादशीस्तवन		२०वीं	४४-४८	
५०५	८०३७	मौनीएकादशीकथाचौपाई		१८३४	११	लि. क. भगवान ।
५०६	१०२४८ (१६)	युगंधरजी गीत	आलमचंद	१८१३	१३४-१३६	
५०७	८२८६	योगसारसाहिंली वार्ता		१८वीं	५	
५०८	६०००	रत्नपालचरित्ररास	मोहनविजय	"	३६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०६	८१०१	रतनचूडचउपई	जिनरतनसूरि	१८वीं	२१	र. का. १७२८ ।
५१०	८२६७	रतनचून्न मणिचून्नचरित्र		१८७१	६१	लि. क. बदीचद ।
५११	८२३३	रतनपालशृङ्गिचरित्र	मोहनविजय	१८६७	७५	लि. स्था. क्यामपुर ।
५१२	८२३२	रतनपालमुनिचौपई	रूपवल्लभ, रघुपतिगणिशिष्य	१८२०	१५	लि. क. मोहनविजय ।
५१३	१०६७५ (५)	रतनमहेसदासोत रांगडरी वचनिका		१६वीं	८५-६०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
५१४	८७४८ (३)	रतनाहरीररी बात		१८८५	१-१६	लि. क. माणिक्यराज, कर्त्तिका गुरुभाई । लि. स्था. बीभासर ।
५१५	६१२७	" "		१६वीं	१५-३४	लि. क. नाथू व्यास ।
५१६	८६४१	रसरतनागर	सैदपहार, सैदहमजामुत	१८४०	६५	लि. स्था. जोधपुर ।
५१७	८५६० (२)	रसालुक्कररी बात		"	२०-५३	पत्र सं. ३१ से ४५ अप्राप्त ।
५१८	८५६० (३)	रसालुक्करकी बात		१८८०	५५-६५	
५१९	८८४८	रसिकप्रियाराजस्थानीटीका	केशवदास	१७५४	१-६	लि. क. मुनि प्रेमसुन्दर ।
५२०	१०२४८ (१४)	राग, ढाल आदि		१८१३	७१-११२	
५२१	६७२२	रागपद		१६वीं	१-४०	
५२२	६२८६	रागसंकेत		१८वीं	८	
५२३	८८५५	राजनीतिशास्त्र (हितोपदेश)	नारायण	१६००	१३७	लि. क. गणि मोहनविजय ।
						लि. स्था. राधोगड़, अजितसिंह राज्ये ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२४	६४५०	राजप्रश्नीयसूत्र सद्वार्थ		१७६६	१७४	
५२५	६५२२(४)	राजमतीगीत		१८वीं	३	
५२६	६४८०	राजाभोजरास	कुशलधीर	१७२६	५०	र. का. १७२६। र. स्था. सोभत।*
५२७	६१६३	राजारिसालूरी बात		१८वीं	१६	लि. क. मानसिंह। लि. स्था. कुचेरा।
५२८	८५०६	राजियाका सोरठा	कृपाराम बारहट	१६४८	३२	लि. क. सबलसिंह शेखावत। लि. स्था. पलयाणा।
५२९	१०१८० (११)	राजुलसभाय		१६वीं	३१-३२	
५३०	८४००(२०)	राणपुरागीत	समयसुन्दर	"	६०-६२	र. का. १६७२।
५३१	८४२२(३७)	राणपुरारो स्तवन		१८वीं	११४ वां	
५३२	१००५१ (२२)	राणी कमलावतीरी सिङ्गाय		१८५५	१५०-१५३	लि. क. लिपमोचंद ऋषि। लि. स्था. माधूपुरी।
५३३	६१२८	राधावल्लभका ख्याल		१६वीं	७४	*
५३४	८४६८(२)	रानाबाईकी परची		१८वीं	५-१६	लि. क. इन्द्रविजय।
५३५	७८६८	रामकृष्णचरित्र	लावण्यकीर्ति	१७१६	३८	लि. स्था. शुद्धदंतीपुर। चित्र सं. ६३४।
५३६	६२८१	रामचरित्र, सचित्र		१८वीं	२४१	लि. क. सूर सौभाग्य।
५३७	७६००	रामचरित्र	केशराज	१८५१	६८	लि. स्था. नारायणगढ़, मलागढ़ पाश्र्वे।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३८	८३२९	रामचरित्र (रामयण रसायन)	केशराज	१८७५	११७	लि. क. मोहता आरज्याजी, ववता सिंहराज ।
५३९	८२६२	रामचरित्रको कवको	"	१८वीं	३	
५४०	८१२६	रामजस	"	१६८७	१५४	र. का. १६८३ ।
५४१	८२८८	रामरस बोध	"	१८वीं	६२	
५४२	८५५६ (४)	रामरक्षा स्तोत्र	रामानंद	१८५५	१८६-१८६	
५४३	८८२१	रामरासो	माधोदास	१८४०	२८	
५४४	७६०२	रामविनोद	रामचंद्र, पद्मसंगशिल्प	१८वीं	८४	अपूर्ण ।
५४५	८२४३ (१)	"	"	"	१३८	
५४६	८३५३	"	"	१६वीं	१०७	"
५४७	८४५१	"	"	१८वीं	६१	पत्र सं. ७७-८३, ८५-११३
५४८	८५२८	"	रामकवि	१६वीं	१५७	और ११५, १२७ तथा १३२ अप्राप्त ।
५४९	८६३६	"	"	१८वीं	११३	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त ।
५५०	१०२४०	" भाषा	समयसुन्दर	१८७३	६६	
५५१	८६६६	रामतीता चौपई	दोडरमल	१८३५	८४	
५५२	८४६०	रामायण कवका	वहादुरसिंह, महाराज, किसानगढ़	२०वीं	२०	
५५३	७८७४	रावत प्रतापसिंह		१८६५	२७	लि. स्या. जयपुर ।
५५४	१००५१ (६)	महोक्कर्मसिंह हरिसिंहोत्तरी वात रिषभदेवजीरो तवन		१८८५	११२ वां	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५५	१०५१ (८)	रिषभदेवजीरो तवन	वनयकुवर	१८८५	११३-११४	र. का. १६३७। र. स्था. विजयपुर। प्रथम पत्र अप्राप्त।
५५६	८८०१ (१)	रूपचन्द्र चौपाई		१८वीं	५४	
५५७	६०८६	रूपदीप पिपल	जयकृष्णपुष्करणा, भवानी-दाससुत	१६५०	१५	
५५८	८१६१	रूपदीप भाषा	जयकृष्ण	१६२६	६	लि. क. रामदास कबीरपंथी।
५५९	८२६०	रूपसैन रास	महानंद	१८५०	८६	र. का. १७७२।*
५६०	६०६२ (२)	लावणीसंग्रह		१६६१	८-४७	लि. क. ब्रध्नीचंद।
५६१	१००५६	लीलारास		१६वीं	६८	लि. क. मोहनकीर्ति।
५६२	८१७१	लीलावती चउपई	लामवर्धन	१७४५	४८	र. का. १७२८। प्रथम पत्र अप्राप्त। कीटविद्ध प्रति।
५६३	७६६३	लीलावती भाषा	मू. भास्कराचार्य	१६वीं	३४	लि. स्था. बीकानेर। अनूपसिंह राज्ये।
५६४	८५१४	" "	टीका लालचंद	१६२२	२१	लि. क. कानकुशल।
५६५	६००४	" "	" "	१७८२	२३	
५६६	८४६५	लीलावती भाषानुवाद	अमीचंद	१८६६	१०५	
५६७	८४६६	" "	" "	१६२५	८८	
५६८	८३२१	लीलावती भाषा	लालचंद	१७७४	१७	
५६९	८५०५ (२)	धंशवली उत्पत्ति, भागवतान्तर्गत		१६२३	१-७	लि. क. रामदास कबीरपंथी।
५७०	८४२२ (३६)	वरकाणा पारसनाथतवन		१८वीं	११३ वां	

क्रमिक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७१	१०५२ (१४)	वर तपस्तथन		१८६७	१३६-१३७	
५७२	८६४१	वस्तुपाल तेजपालरास	समयपुन्दर	१९वीं	२	स्फुट पत्र । लि. क. आशुलाल
५७३	९८२६	वास्तुशास्त्र		१९५३	७	पोकरणा । लि. स्था. नवानगर ।
५७४	८०८८	विशति पदपूजा	जिनहर्ष सूरि	१८७५	१४	लि. क. हंसराज मुनि ।
५७५	८४२५	विक्रमकथा		१८वीं	२४-१३७	प्रारंभके २३ पत्र अप्राप्त ।
५७६	७६४०	विक्रमचरित (पंचवंड चौपाई)		१७६२	२६	लि. क. तिलकसुन्दर ।
५७७	८६८०	विक्रम चौबोली	अभयसोम	१८४५	१७	लि. स्था. जोजावर ।
५७८	८१८३ (८)	विक्रमरास	लाभवर्धन	१८वीं	६५-८०	
५७९	८८०८	विक्रमसेन लीलावती चौपाई	मानसागर	१८०१	४२	
५८०	७६२३	विक्रमादित्यसुत विक्रमसेन चौपाई	मानसागर, जीतसागरशिष्य	१८१४	२८	लि. क. चंद्रसौभाग्य ।
५८१	६४७३	विचार ग्रंथ		१७१७	२२	लि. स्था. चीताखेड़ा नगर ।
५८२	९१९७	विचार गाथायं				लि. क. ऋषि कान्हजी धनराज मुनिशिष्य ।
५८३	९४५८	विचाररत्नसार. बालबोध		१८१६	७	लि. स्था. बुरहानपुर ।
५८४	७६७६	विचारस्तव बालावबोध		१९१६	१०२	लि. क. पं. कृष्णविमलगणि ।
				१९१६		लि. स्था. बीभेवा नगरे ।
				१९१६		लि. क. व्यास मोरमल ।
				१९४२		लि. स्था. नागपुर ।
				१९४२	६	लि. क. कुशलनाभ ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८५	६७००	विचारस्तवबालावबोध	विनय[विनीत]विमल (गंभीरसागर शिष्य)	१६१४	७	प्रथम श्रीर २६वां पत्र अप्राप्त ।
५८६	८१५०	विद्याविलास		१६वीं	४०	खरड़ा ।
५८७	१००२५	विनति पत्रिका, सचित्र		१७७२	१०८-११३	लि. क. अमरसागर ।
५८८	८४२२(३५)	विमलसाहरो सिलोको		१६३१	६	लि. क. व्यास मंगमल । लि. स्था. वीकानेर ।
५८९	६४६१	विमलाचलतीर्थ आरती	जिनदत्त सूरि	१८३१	१-२१	लि. क. हेमसागर मुनि ।
५९०	६०५२(७)	विवेकविलास		१८४६	६२	लि. स्था. कच्छब्रदर ।
५९१	८६५५	विवेकविलास सबालावबोध		१८१२	५६-६४	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
५९२	१०२४८(८)	विषयत्याग गीत		१८वीं	५	
५९३	६६७४	विषहरण	देवचंद	"	१-४	खरड़ा : लेख भाग १४। फीट, चित्र भाग ६। फीट । सोजत
५९४	६२५७(२)	विषापहारस्तोत्र भाषा		१६वीं		जैन संघ द्वारा पाटनस्थ विजय जिनेन्द्रसूरिके प्रति ।
५९५	८५६६	विज्ञप्ति पत्र, सचित्र		१८६१		खरड़ा । लेख भाग १०। फीट, चित्र भाग २१ फीट । मेड़ता
५९६	८५७०	" "				जैनसंघ द्वारा राधनपुरस्थ विजयजिनेन्द्रसूरिके प्रति ।
५९७	८१५७	वीरनिर्वाणस्तवन	देवचंद	१८वीं	५	
५९८	६७२०(११)	वीरमदेरी बात		१६वीं	६१-१४२	

क्रमिक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६६	१०६४६	वेतालपचीसी		१८००	४८	लि. क. देवनाथ प्रश्नोरा ।
६००	६२६६ (३)	वेलीकृष्णरक्षिमणी[री]		११२७	३६-७०	लि. स्था. सवाई जयनगर ।
६०१	६१५२ (६)	वैद्य मन्तोत्सव		१६०५	७० वां	लि. क. नंदुराम ।
६०२	७६३०	वैदमनोछव		१८११	१०	र. का. १६४६ । र. स्था. सिंह- नंद नगरे । अकबरसाहि राज्मे ।
६०३	८१२२	वैदरभी चौपई		१८वीं	६	लि. क. सुजांण ऋषि ।
६०४	१००५० (१६)	आवकनी करणी	पेमराज	१६वीं	४५-४७	लि. स्था. लोटोती ग्राम ।
६०५	१००५३	आवकनी करणी, आदि सिम्हाय संग्रहे		"	६४	लि. स्था. वोकातेर ।
६०६	१००५२	आवकनी पडिकमणो		१८६७	१६४-१६६	
६०७	८४०० (१४)	आवकरी करणी		१६वीं	४२-४५	
६०८	८४२८ (१८)	" "		२०वीं	१४५-१५३	
६०९	१०२४८ (६)	" "		१८१२	५४-५६	
६१०	१००५१ (६)	आवकरी सङ्काय		१८८५	११४-११६	
६११	१००५२ (१)	आवकस्तवन सारिणी		१-६७	१-३३	
६१२	८४०० (४)	श्रीअष्टक		१६वीं	१०-११	
६१३	६८५०	श्रीपाल चरित्र भाषा			७०	प्रथम पत्र अप्राप्त । अपूर्ण ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१४	८२३१	श्रीपालप्रबन्ध चतुष्पदी	लालचंद	१६२७	६२	र. का. १८३७ । लि. स्था. अजीमगंज ।
६१५	१०४७५	श्रीपाल महाराज चरित्र		१८३५	१११	अपूर्ण, स्फुट और त्रुटित पत्र ।
६१६	७६२५	श्रीपाल रास		१८२७	४३	र. का. १७३८ ।
६१७	७६४६	" "		१६वीं	६०	
६१८	८३४२	" "		१८७२	५३	
६१९	८८३२	" "	नयविजय	१७८०	१०	र. का. १७३०
६२०	८६८६	" "	जिनहर्ष	१६वीं	५७	
६२१	६४४८	" "	विनयविजय यशोविजय	१८वीं	७४	लि. क. चतुरसागरगणि ।
६२२	६४५३	" "	महोपाध्याय विनयविजयगणि	१७५७	२४	
६२३	८४०० (१६)	श्रीस्तवन		१६वीं	५२-५३	
६२४	८४२२ (१६)	" "	गुणसागर	१८वीं	७७-७६	
६२५	६८६१ (६)	" "		२०वीं	२७-३०	
६२६	१००५२	" "		१८६७	१३२-१३३	
	(१०)					
६२७	८४३० (१४)	शकुन्तरा दोहा		१८१३	१०२-११५	
६२८	६२६५	शकुनावली आदि		१८०७	१०६	
६२९	८५५८ (३)	शनिश्चरदेवजीरो स्तोत्र	कर्पूरविजय	१८४३	१-८	
६३०	१००५०	शनिसरदेवकी कथा		१६वीं	१-१३	
	(१०)					
६३१	८४०१	शनिश्चर कथा		१६२७	४६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३२	१००५० (५)	शत्रुञ्जयगिरिवररास	समयसुन्दर	१९वीं	१६-२६	लि. क. गंगाराम ।
६३३	८४२८ (११)	शत्रुञ्जयगिरिवरस्तवन	"	२०वीं	११४-११६	र. का. १६८२ ।
६३४	८३१९	शत्रुञ्जय रास	"	१८वीं	६३-६८	लि. क. कल्याणनिधान मुनि ।
६३५	८४२२ (१३)	" "	"	"	६	
६३६	९४६७	शत्रुञ्जयस्तव	विमलहर्ष	१९२२	६३-९४	
६३७	८४२२ (२७)	शत्रुञ्जयस्तवन	"	१८वीं	८७ वां	
६३८	१०१८०	" "	"	१९वीं		
	(३६)	"	मुहणोत जोगीदास	१८६२	२-२४	#
६३९	७८७५	शत्रुभेद	"	१७८७	१	
६४०	९५२२ (२)	शान्ति जिनस्तवन	"	१९वीं	७४-७५	
६४१	१०१८०	" "	"	"	६३-६५	
	(३०)	"	पाशचंद	१८वीं	८४-८५	
६४२	८४०० (२३)	शान्तिनाथ गीत	गुणसागर, पद्मसागरशिष्य	"	४-५	र. का. १६७८ । प्रथम पत्र
६४३	८४२२ (२१)	शान्तिनाथस्तवन	"	"	१७	अप्राप्त । लि. स्था. महाजननगर ।
६४४	९५२४ (२)	" "	जिनराजसूरि	"	१८	
६४५	९६५९	शालिभद्र चरित्र	"	"	४८-५५	लि. क. गांग ऋषि
६४६	८२५६	शालिभद्र चौपई	"	१९००	१२५-१५३	लि. क. जति रूपचंद पुनम
६४७	९१५२ (२)	" "	"	१८वीं	४४-६९	गच्छे । लि. स्था. रतलाम ।
६४८	८४२२ (४१)	" "	"	१८९८		
६४९	८९०८ (३)	" "	"			

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५०	६१०१	शालिभद्र चौपई		१६२८	३३	र. का. १६७८।
६५१	१०१८० (४७)	शालिभद्र धनाभा[रा]स		१६वीं	१३८-१३९	लि. क. प्यारचंद महात्मा
६५२	८६६५	शालिभद्र रास	जिनराज सूरि	१७वीं	२१	पत्र संख्या ६-१३ अप्राप्त। लि. क. थिरराज।
६५३	१०१८०(४)	शालिभद्र स्वाध्याय		१६वीं	२४ वां	
६५४	८४२२, २८	शालिभद्र सज्जाय	सहजसुन्दर	१८वीं	६४-६५	
६५५	८३४३	शालिहोत्र	मू. नकुल	१७६४	१२	लि. क. तुलसीदास वैष्णव। लि. स्या. वेधव।
६५६	६७२४	"	"	१८२६	१-५२	लि. क. बखतरास।
६५७	६३३६	शालिहोत्र टीका		१८६२	३६	
६५८	८५६६	शालिहोत्र, सचित्र		१६वीं	६८	चित्र संख्या ४६। जीर्ण और बुद्धित प्रति।
६५९	१०१८० (५०)	शीतलनाथनुं तवन		"	१४३-१४४	
६६०	१०१८० (१६)	शीतलनाथस्तवन		"	४५-४६	
६६१	१०१८० (१५)	शीयलसज्जाय		"	४३-४५	
६६२	६८५४	शीलप्रबन्ध कथा		१८४५	१३	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	८३२२	शील रास	विजयदेव सूरि	१७वीं	४	लि. क. मुसकु स्वय्या ।
६६४	८७२१	"	"	१८वीं	५	लि. क. गगादास जोशी ।
६६५	७६३२	शीलवंती कथा		१६८७	६	एक ओर लिखित पत्र है ।
६६६	१०१८० (६१)	शीलसज्जाय		१६वीं	१८६-१६१	
६६७	८२१४	शुकबहोत्तरी		"	३०	
६६८	८१०५	शुद्धमति जिनस्तवन	देवचंद्र (?)	१६३०	६	
६६९	१०१८० (४३)	शोत्रुजा उद्धार		१६वीं	१२६-१३२	
६७०	८४२६ (२८)	स्तवन सज्जाय संग्रह		१६३१	१११-२१७	पत्र सं. १६४, १६५ अप्राप्त । लि. क. हुकमीचंद । लि. स्था. मंदसौर । र. स्था. जैसलमेर । लि. क. हुकमीचंद ।
६७१	८६५	स्तवनावली		१७२६	१६	
६७२	८४२६ (१)	स्तुति पद संग्रह		१६५६	१-१६	
६७३	८४२८ (३)	स्नात्रपूजा		२०वीं	१-१८	
६७४	१०६७५ (२)	स्फुट दोहा कवित्त		१६वीं	६	
७७५	८४३० (१५)	स्फुट पद संग्रह		१८१३	११६, ३१७	
६७६	६७३३	स्फुट राग पदावली		१६वीं	५६	
६७७	६५००	स्वामी [जंबू स्वामी] चरित्र		१८०५	१४	लि. क. भोजराज । लि. स्था. बीकानेर । र. का. १५८३ । र. स्था. अहिपत्तन ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७८	८४०० (३०)	संखेसर जिनस्तुतिपद	जिनहर्ष	१६वीं	७२-७३	
६७९	८४०० (२९)	संखेसर पार्श्वनाथस्तवन	जिणचंद	"	७१-७२	
६८०	८२८२	संतदासजीकी वाणी	संतदासजी आदि	१८वीं	३६८	
६८१	८७९६	संतरद्वार		१७९५	३३	
६८२	८८६०	संवत्सर फल		२०वीं	१४	
६८३	१००५० (१७)	सज्जाय स्त्री पुरुषकी		१८७८	५८-६०	लि. क. गुलाबचंद । लि. स्था. सागर ।
६८४	८७६४	सज्जायसंग्रह	रत्नसागर	१६१९	१५	
६८५	८६२६	सतरा प्रकारकी पूजा		१६वीं	९	अपूर्ण ।
६८६	८९९३	सत संवत्सरफल		"	२०	
६८७	८४०० (८)	सद्गुरुवर्णनभाषा	मेघराज मुनि	"	३६-३७	
६८८	८५६५	सर्ववच्छ सावर्णिगारी वात, सचित्र		१८१६	३६	चित्र सं. २६ । लि. क. जितेन्द्रसागर ।
६८९	८८६१ (१५)	सनात्रपूजा	देवचंद	२०वीं	७५-८१	अपूर्ण ।
६९०	८४०३ (४)	सनात्रपूजा विधि		"	६८-७६	
६९१	१००५९ (४)	सप्ततिसत जिनस्तोत्र	जोधराज गोदीका	१७वीं	४१वां	
६९२	८६५३	सम्यक्तत्त्वकौमुदि	रतन चरित्र	१८वीं	६०	
६९३	८७१२	सम्यक्तत्त्वकौमुदि		१६०६	५०	
६९४	७९०४	समयसार नाटक टीका		१६वीं	१२९	"
६९५	८६०५	समेतशिवरगिरिपूजा		१६३१	६	लि. क. मंगमल व्यास । लि. स्था. विक्रमपुर ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६६	८२८३	समेतशिखररास टीका	सौभाग्यसुन्दर	१६१८	७	र. का. १६०७।
६६७	८४२६(२)	समेतशिखर रासो	देवीचन्द	२०वीं	१६-३७	
६६८	८४००(४२)	समेतशिखरस्तवन	मनरंग	१६वीं	८६-६०	
६६९	८४२२(५)	सरसतीजीको छंद		"	२४-२७	
७००	१०१८० (२२)	सर्वे कर्त्तृता		"	६१ वां	
७०१	६६७५	सर्वेया जैनसतका		१८वीं	६	
७०२	८१७२	सत्रहभेदी पूजा	समयसुन्दर	"	८	
७०३	८१८३(२)	सत्रज्जयरो रास		"	७-१५	
७०४	८५५६	सांवा साहिबकी वीनती		१८५७	३०	लि. क. सोजीराम।
७०५	८४२२(३८)	सांतनाथतवन		१८वीं	११५	
७०६	१००५१ (१४)	सांतनाथजीरो तवन		१८८५	१३६-१३७	
७०७	१००५१	"	"	"	१४४-१४५	
७०८	८८३६	"	"	१७वीं	१७	पत्र सं. २ से ५ अप्राप्त।
७०९	८८२६	सांबप्रद्युम्न चौपाई	"	१७०१	१७	लि. स्या. नीमली।
७१०	७९२८	सागरदत्त चौपाई	गुरु भांभरण शिष्य (?)	१८वीं	१७	र. का. १७४४।
७११	१०२४८(५)	सातैव्यसनसिद्धभाय		१८१२	४६-५४	र. स्या. मेवपाट। लि. क. दर्शनसागर। लि. स्या. जालौर।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१२	८३१८	साधना गुणसंग्रह	क्षुलककुंवर	१७वीं	३	
७१३	८४२६ (६)	साधुचैत्यवंदन		२०वीं	४८-५०	
७१४	१००५० (११)	साधुवंदना		१८७५	१३-१६	लि. क. नेमिचन्द्र, लि. स्या. वीकानेर ।
७१५	८४०० (७)	साधुवंदना	पाठाचन्द	१६वीं	२१-३५	
७१६	१००५२ (१८)	"		१८६७	१४२-१५२	लि. क. लक्ष्मीचन्द्र ।
७१७	१०२४८ (१)	"		१८१२	५-३५	लि. स्या. अवंतिका । लि. क. पं. जसवंत. चि. अमरा सहित । लि. स्या. वाङ्मेर । प्रथम ४ पत्र अप्राप्त ।
७१८	६८१३	सारस्वतविसर्ग संधि		१६५७	१४	लि. क. पं. कैवरीसागर । लि. स्या. फलवर्द्धि नगर (फलोधी ?)
७१९	८१८३ (५)	सालिभद्र महामुनि चरणपई	जिनराज सूरि	१८५४	२४-५७	लि. क. नृसुंदर । लि. स्या. राजलदेसर, सुरतसिंह राज्ये ।
७२०	८१८३ (७)	सिंहलसिंह[सुत] चौपई	समयसुन्दर	१८वीं	६०-६४	र. का. १६७२ ।
७२१	७६६१	सिंहलसुत चौपाई	"	"	१०	र. स्या. मेड़ता ।
७२२	८८३३	सिंहलसुत रास		१७वीं	"	लि. स्या. भूठाग्राम । लि. स्या. विक्रमनगर ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२३	८२१०	सिंहासनवत्तीसी	हर्षसागर शिष्य (?)	१६वीं	४२	प्रथम पत्र अप्राप्त । एकादश कथा पर्यन्त ।
७२४	८०३२	सिंहासनवत्तीसी, सबालावबोध		१८वीं	२८	
७२५	८४२६(५)	सिद्धचक्रजीको तवन		२०वीं	४३-४४	
७२६	८४२६(६)	सिद्धचैत्यवंदन		"	४४-४५	
७२७	८४२८(१२)	सिद्धाचलगिरिस्तवन		"	१२६-१२८	
७२८	८४००(१८)	सिद्धाचलस्तवन		१६वीं	५६-५८	
७२९	८१५६	सिद्धिचक्र आराधन विधि	सोमप्रभ	"	६	लि. क. ऋषभदास । लि. स्था. सपादेश ।
७३०	७६१८	सिद्धरूपकरण		१८०२	१२०	
७३१	१००५१ (२०)	सीतारी सिञ्चाय		१८८५	१४५-१४६	
७३२	१०१८० (१६)	सीमन्धर जिनस्तुति		१६वीं	४८-५६	
७३३	१००५२(६)	सीमन्धरजीस्तवन		१८६७	१३२ वां	
७३४	१००५२ (१७)	" "		"	१४१-१४२	
७३५	८४२८(१३)	सीमन्धरस्तवन	देवराज मुनि नयविजय	२०वीं	१२८-१२९	लि. क. हेमराज ।
७३६	६५२२(६)	लीमन्धरस्वामीजीसु चैत्यवंदन		१८वीं	४	
७३७	८४२२(१५)	सीमन्धरस्वामी विनती		"	७२-७७	
७३८	८४०२(२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन		२०वीं	४२-५३	
७३९	१०१८० (१८)	" "		१६वीं	४७-४८	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४०	८४२२ (२२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन	भक्तिलाभ	१८वीं	८५-८६	पत्र संख्या ६१वां अप्राप्त ।
७४१	८५६२ (३)	सुखसमाधि	खेमदास स्वामी	१९वीं	४५-६६	
७४२	६६५८	सुदर्शनश्रेष्ठिकथा		"	३४	
७४३	८५६४ (२)	सुन्दरदासजीको कृत	रूपवल्लभगणि	१८२७	५२-२०४	
७४४	६५८५	सुभद्रासती चौपई		१९वीं	१५	
७४५	१०१८० (५४)	सुभद्रासिञ्जाय		१९वीं	१५०-१५२	
७४६	६०११	सुभासित द्रहा	जिनरंग (?)	१७वीं	१	
७४७	८४३२	सुमतिनाथ गीत		१७२६	२-२३	
७४८	८४०० (३७)	सुमतिनाथस्तवन	पाशचन्द सूरि	१९वीं	८२-८३	
७४९	८८३८	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६६७	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. क. वच्छराज । लि. स्था. भेलसा । लि. क. अमरसागर । लि. क. छोटेलाल ब्राह्मण ।*
७५०	८४२२ (३६)	सुक्षत्रसम्पाय	सहजसुन्दर	१८वीं	११५-११६	
७५१	८६१५	सूर्यनाथ मंगल (वैद्यक)	रूपनाथ जोगीश्वर	१६०८	५५	
७५२	८४०० (६)	सूरजरी सिलोकी		१९वीं	१६-२२	
७५३	८४२८ (१४)	सूरप्रभुस्तवन		२०वीं	१२६-१३०	
७५४	१०१८० (२६)	सेतुजीस्तवन		१९वीं	६७-६८	
७५५	८४२८ (६)	सेत्रुंजरसि (शत्रुञ्जय रास)		२०वीं	७५-१०६	लि. क. पं. रतनलाल कोटवाल । लि. स्था. महेन्द्रपुर ।
७५६	१०१८० (५२)	सेत्रुंजसिद्धस्तवन		१९वीं	१४८ वां	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५७	८४२८ (२१)	सोत्तेसतीनी वंदना	जिनोदय	२०वीं	१-६	लि. स्था मंदसौर ।
७५८	८८२८	हंसवच्छ चौपई	जिनोदय सूरि	१७१४	२२	लि. क. पं. लिपिमीचन्द ।
७५९	८६०८ (२)	हंसराज वच्छराज चौपई	"	१८६३	१-४३	लि. क. शिष रूपचन्द गद्य (?)
७६०	८०८४	" "	"	१६३२	४५	लि. क. प्यारचन्द ।
७६१	१००५१ (१)	" "	"	१८८५	१-६५	लि. स्था. पावटा ग्राम ।
७६२	८८४४	" "	"	१७६१	२८	
७६३	८८३७	" "	"	१७वीं	२४	
७६४	८४२२	हंसाउली	असाधित	१६वीं	२६	लि. क. नैनसुख नाजर ।*
७६५	८५०१ (२)	हमीर रासो	महेश कवि	१६वीं	८८-१४६	
७६६	८५५६ (३)	हरिचंद सत		१८वीं	६७-१८८	
७६७	८२४०	हरिदासजीके पद		१७वीं	३५	
७६८	८४४०	हीरवलमाखी रास	कुशलसंयम	१८६३	६८	लि. क. चैनकरण ।
७६९	१००५१ (१३)	हितोपदेश भाषा		१८८५	१३५-१३६	लि. स्था. सीवां ।
७७०	८१५१	हीरजीरो तवन		१८वीं	७	
७७१	१०१८० (२१)	त्रयोदश बोल		१६वीं	६० वां	
७७२	१०२४८ (१५)	ज्ञानपचवीसी		१८१३	११२-११५	
७७३	८४२६ (२५)	ज्ञान पञ्चमीतपस्तवन		२०वीं	१०२-१०६	
७७४	८४२६ (११)	ज्ञानपञ्चमीविधि		"	५१-५२	

* श्री *

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१८१.

८५६२ (८) * चौहान पृथ्वीराजरो छंद

आदि — सिधि श्रीचुहाण प्रीथीराजरो छंद भुजंगी लिष्यो । गजनीरै पातसाह बंध
कीय्यो जदी करणा कीधी जणी सिम्यारो ।

पर्यो गजनी वंदनमे छ हथं ।
बीचारं करै आप करतुत पीथं ॥
हण्यो दास कैहेत कैलास बाणं ।
गज पुन च बड वैरी भराणं ॥
बंदै कान काका चपु पट गाढै ।
बिना दोस पंडीर सै भ्रत काढै ॥
वरजंत चंद चलयो हुं कनोजं ।
जहा सूर सामत कटै घटं फोजं ॥

ग्रन्त — पवारै गिनाऊ कहा लग तोरे ।
करूं बीनती डीतनी हाथ जोरै ॥
विसासं नवि संभरं विसारो ।
अन अपराध अहंकं बीसारो ॥
अबै होय नूदे न देषो तमासो ।
ग्रह्यो ग्राह ज्यु गज सांडी नीकासो ॥
बिना राज आजं करै कोन काजं ।
नीभाहो बीरुदं गरीब नवाजं ॥
सदाई कहावो करणानीदानं ।
करो आय सहाय कहै चहुआणं ॥ १

संपूर्ण ली० पं० गुलावराय हरीदास्तो [स्रोत] सं० १७६७ व्रसे ।

१६१.

८५६२ (९) जनमबत्तीसी

आदि — ॥दं॥ सिवस्ती श्रीगणेशाय नमः । अथ जनमबत्तीसी लीष्यते । कृत पचोली
भगतारामजीरी । संवत् १७६५ रा भादवा वीद १३ रै दीन ग्रंथ कीय्यो ।

दुहा — मथुरा जनमे जगतपत, देवग्रभ अवतार ।

सकल बीसव सुषि अत भऐ, सुर नर जै जैकार ॥ १

*प्रथम संख्या सूचीके क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क की सूचक है । कोष्ठक के
अङ्क गुटका के अन्तर्गत रचना-संख्या के द्योतक हैं ।

चुत्रभुजा घर चुत्रभुज, आवध संजुत अनंत ।
दोय्यो दरस वसदेवही, देव नमन विहसंत ॥ २

अन्त - जा हरिकी गम वेद नही अरु सेस महेस न पार लय्यो है ।
जा हरि कारण मुनि तपेसुर, पोजत ही जुग बीत गय्यो है ।
ज्यो हरिनै त्रीपा करके नंदके ऊर आन ओतार ठय्यो है ।
भगत राम भगै ब्रीजमंडलमै घर ही घर ओछव होय रय्यो है ॥ ८

दुहा - घर घर भई वधाईय्या, मंगल गाई नार ।
ददकादम पेलै सवै, ओछव भय्यो अपार ॥ १
जनमवतीसी ग्रंथ कर, रूपज्यो झीधक हुलास ।
भगत राम भय त्रांस तज, कर हरचरण नीवास ॥ २

संपूर्ण । सं० १७६५ रा भाद्रवा सुद १ सुनी लीपतु पंचोली गुलाबराय हरी-
दासीत ॥ श्री ॥

२५०.

८७२२ द्रूपदी चउपई

आदि - ॥६०॥ सकल जिणोसर वीर जिण, जगनायक जगिसार ।
अष्ट कर्महे लइ हाथा निहण्या, दोष अब अट्टार ॥ १
वांणी योयनगांमिनी, बुद्धि अंगि विशाल ।
ए अध्ययन सोलमिइ, भाषि अरथ रसाल ॥ २

अन्त - एय चरित्र सभलीय, भवीय तप संयम धरिवुं ।
चुथा व्रत पालवा काजइ, परमादन करवु ॥ ८६
जिम अध्ययन सोलमिए, अंगि छति जेहुवुं ।
चुपई मांहि मि कहिउं, ए द्रूपदीनि तेहुवुं ॥ ८७
भगयो गुणयो करी ववेक, मि भाषिउ भोलि ।
मिछा दुक्कड़ दिउ त्रि सुधि, जो वालिउंड हलि ॥ ८८

संवत् १६५२ वर्षे फागुण वदि १४ बुधे लखत.....इति श्री द्रूपदीनी चुपइ
संपूर्ण ॥ समाप्त ॥

२७६.

८२५२ दुहा सोरठा किसनीयारा

आदि - अथ दुहा सोरठा किसनीयाका

पय तूंडणीं भरेह, दारु ताय आपै दुनी ।
कुसंगत कलंक चढेह, काने रहजे किसनीया ॥ १
हाथी जाए हेक, लप कूकर लारा लवे ।
वडपण तणे ववेक, कोई न पीजै कीसनिया ॥ २

अन्त - राम तणै या रीत, लपीयो लो पाए नहीं ।
पोते राप परतीत, करसी पोहतो किसनीया ॥ १८

किम बांधे तरवार, केहना गढ लेवा चढे ।
मिलै ती वैरी मार, काया माहिलौ किसनीया ॥ १६

३२६.

८५१५ नागराज पिंगल

आदि - ॥ श्री गणेशाय नमो ॥ अथ नागराय पिंगलं ॥
ह ज घ न ध र षं भ वन्नैः वरजित अठ अषराणं ।
पढ मय ए छंद ग्रहेः सुंणि सुंदर पिंगल पुंण ऐं ॥ १
मगण द्वव दु गुरु तिन्नि, यगण लहु आदि द्वविज्जुहुं ।
रगण लहु मप्ति होय सगण गुरु अंत करि जुहुं ॥ २

अन्त-कवित - प्रथम टालि गणदोष, पछ्छै परिहरि दध अक्षर ।
ह ज घ र घ न षं भ होय, ए अठ अक्षर प्रथम न आंणिए अक्षर ॥
जिव आंणि अति जुगतिसुं, डिडभर वेणसगुआई ।
भाव भक्ति कहो भेद, किसे गुण जास कमाई ॥
विगताई लघु दीर्घ सवे, अमृत रस वांणी कही ।
श्री नागन राउ पिंगल कहै, कवि वीचार बांधो कवित ॥ १६

इति श्री नागराज पिंगलमतं ॥ लिषिकृतं रामदास काबीरपंथि ॥ संवत् १६२३ अः
द्वितीये ज्येष्ठ शुदि ६ बुधवार ॥ सतनांम कबीरकी दयाः घनि धर्मदासजीकी दया ॥ रं रं रं ।

३५६.

८५१० प्रेमरत्नाकर

आदि - ॥ श्री गणेशये नमो ॥ छप्पय ॥
जय २ गणपति देव देवसेवित सनेह चित ।
महादेव नरदेवदेव सेव करत नित ॥
लहई बुद्धि वर सिधि भोग भवके बहु भजित ।
अगम होइ सब सुगन नांम जाको कलि कुंजित ॥
गणराज काज पूरण करण प्रबल बुधि बल दीजिये ।
रतनेस राम सुषधामजुत ग्रंथ एक जिम कीजिये ॥ १

अन्त - जुग २ कीरति बढायवेकों राजनीकी,
सभामें पढायवेकों आछो गुन गायो है ।
प्रेमको सरूप कह्यो भूप रतनेसजीकों,
जीवन जगतरूप सबकुं सुहायो हैं ।
सुरजको बंस राजा सागरके सागरेन,
सतजुग मांहि एसो सागर बनायो हैं ।
त्यो ही कलिकाल मांझ सोमवंसमें सपूत,
भैया रतनेसजूके प्रेमरतनाकर बनायो हैं ॥ १८६

सर्व ग्रंथ संख्या १८६ ॥ इति श्रीभैया रत्नपाल विरचिते प्रेमरत्नाकरे प्रेमस्वरूप

निरूपन नाम पंचमो तरंग ॥ ५ ॥ संवत् १९२० पौष सुदि १५ लिपिकृत रामदास कावीर-
पंथी ॥ सतनाम कवीरकी दया संत सहं ॥

४२५.

८४६८ (३) फूलवाईकी परची

आदि - अय फूलीवाईकी परची लिखते ॥

चौ० ॥ हूँ मलधारी परणी जुं नांही । पारब्रम पत मेरै माहि ।

सो कहू जनमै मरै जु नांही । सुप सागरउ सदा रहाही ॥ १

सापी । जानी आया गौरवै, फूली कीयौ विचार ।

सब संतारो साहिबो, सौ मेरो भरतार ॥२

अन्त - के करीए उपाय वोही, कहै लीजौ येक राम ।

पूलीका सब ही सरचा, मना मनोरथ काम ॥ ७०

चौपई ॥ संम रसावरण पूली पीयी । सतगुर कह्यौ सोई हम कीयी ।

रामजी सौ दूजौ नही कोई । पूली सब जुग देण्यो जोई ॥ ७१

इति श्री पूलीवाईकी परची संपूर्णः ॥

४२७.

८८३१ बड़ी ब्रह्मचरी

आदि - ॥६०॥ गोयम गणहर पाय प्रणमी करी ।

ब्रह्मव्रत तवस्यउं हरष हीयइ धरी ॥

सुधउ पाली भवसागर तरी ।

पामी पामइ पामिस्यइ शिवपरी ॥

अन्त - एक कह हुवसइ आघइ कर्मग्रच्छि सुधूध करइ ।

अनादि अनइ अनंत च उगइ काल अनंतउ संचरइ ॥

श्रीपासचंदसूरिद सीसइ श्रीसमरसिध हम उचरइ ।

इंद्री तगउ करइ संव रहेला शिवरमणी वरइ ॥

इति श्री बड़ी ब्रह्मचरी समाप्त ॥ श्री ॥०॥

४३६.

१०१६० वीकाजी तमासा

आदि - श्री गनेसाई नमै । तमासो वीकाजीको लीपते ।

आयो र मेरा चाच वोहोरा, आया रै बोरीका बोरा ।

साजी परन्या छो क कवारा ।

सा परन्यो तो छो पनी सानी मरी गई ।

साजी था को तो फेरु परना था ।

हा साव रपवदेवजीकी दुहाई,

व्याव करो तो बड़ी बात करो ॥

ख्याल (तमासा) अपूर्ण लिखित है । आगे "जोगीको तमासो", "कृष्ण-ललिता वचन" आदि लिखित हैं ।

४४०.

१००५१ (१६) भंवरासी सञ्ज्ञाय

आदि - श्री गणेशाय नमः ॥

भूलो मन भवरा कांइ भमो ।

भम्यो दिवस ने रात, मायारो वांध्यो प्रांणीयो ।

भूलो परम लजाय, भूलो मन भवरा कांइ भमे ॥

अन्त - केई चाल्या केई चालसी, केई चालण हार ।

रात दीवस वाटे बहे, परपो नही रे लीगार ॥ भूलो०

मेहमांद कहे वसतु बोरीयो, जे कोइ आवे रे साथ ।

आपणा काज काढवो, लेपो साहिव हात ॥ भूलो०

ईती भवरासी सञ्ज्ञाय सांपूरण ॥

४४१.

८४६८ (१) भक्तविरदावली

ग्रंथ का आदि भाग ऋटित है ।

अन्त - भगतविच्छल भगवानं, वेद संतन मिल गायो ।

पड़ी भगत म भीड, जहां प्रभु आप ज आयो ॥

सुरति समृथ अरु जग कहै, अधमोचन भगवान ।

यूं दास चरणके सरण पड्यो है, बिडद तुम्हारो जान ॥१६

इति भगत-विरदावली संपूर्णः

४४२.

८५६१ (३) भगति भांवती ग्रंथ

आदि - रामजी सति है जी । श्री गु[रु] भ्याय नम ॥ ग्रंथ भगति भांवति लिषतं ।

सब संतनकुं नाउ माथा । जा प्रसादत भयो सुनाथा ॥

भो जल पार गयो को चाहै । तौ संत चरण रज सीस चढावै ॥१

अन्त - दोहा । नमहं राम रामानंद, नमहं अनंतानंद ।

चरन कंवल रज सीरि घरे, परप[म] नगैसानंद ॥२८४

इति श्री भगति भावेती ग्रंथ (ग्रंथ) समापतं । सबत ७१५४ [१७५४ ?] वरषे सावण सुधि एकादसी बार सोमाहवार [सोमवार] लीषतं स्यामी गरवादासजीका सिष रूपदासजी ॥ जगनाथ प्रठनारथे ॥

४४८.

१०१८० (३७) भमर गीता

आदि - समुद्रविजय नृप कुल तिलो [तिलक], मान शिष्यदे नंद ।

बालब्रह्मचारी सदा, नमीह नेमि जिणंद ॥१

तरिथंकर बावीसमो, यादवकुलसिणगार ।

राजमती-मन-वलहो, करुणारस भृंगार ॥२

अन्त — कलस । भेद संयम तणां चित आणे । मानं संवत तणुं एह जाणो ।

वरस बन्नीसनु वरगमूल । भाद्रवें थुण्यां प्रभु सानुकूल ॥२७॥

इति श्री भमरगीता टोडरवंध नेमजी स्तवन्नं संपूर्ण ॥

४७१.

७६३४ मयणरेहा

आदि — ॥६॥ श्री सारदाजी [जी] नमः । दूहा । राग धन्यासी ।

जिण चउवीसइ पय नमी, गणहर गोयम पाय ।

करिसु कवित रूलीयामनउं, गुरु सरसुति सुपासाय ॥१॥

अन्त — जीपी मयणरेहा राषवी । जिणि सासनि महिमा दापवी ।

मयनरेहा सुणि तुं माहा सती । करउं मंगल जयवंती सती ।

पनरह सइ सांन्नीसइ वरिसि । एह प्रवंध कीधुं मनि हरसि ।

वाचीक मतिशेषर इम कहइ । भणइ गुणें ते सर्व सुप लहइ ।

इति शील विषये मयणरेहा महासती प्रवंध समाप्तः ग्रंथा ग्रंथ ५०० । श्री० श्री० श्री०
श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० ।

५०२

८५६२ (४) मोकमसिंघ सगतावतरो गीत

माहाराजा मोकमसींघजी सगतावत भीडरराज एगरो गीत भीमजी अदवा[दा]रो कह्यो छे ।

गीत — जका जगांणी जीहान बीची, जुगां च्यार ताडी जांतां ।

घणी घाट बीच वाता, घडाणीअ अवेस ।

पुराणे संम[भ]ली कथा राषरो[ण्यो] अणी प्रांणी,

माहावीर अेकादसी तांणी मोहकमेस ॥ १

बीषमी सतारा जेण, धारी देवां दांणवासु,

भोम काज भारी भारी मांडाणा भारथ ।

फेरवा पडेवां सीधां सा घका नइ कारी,

नीभै डीकतारी धारी सगतारां नाथ ॥२॥

जांणरा प्रवीण तोतो मंडली मांडाण जाणी,

भागरो न अण्यो मनं ब्रमा भवेस ।

दसु देस दसु द्रगपाल अेतें,

अेका अग्र पुसालरा तो दीसा आदेस ॥३॥

सोर जोर तेज ताप, साम कांम सामरै सुमंद्र,

नेकी अेक थारी मोहकमेस थारी नेकी,

च्यार भुजा राषि सदा अेका अेकी,

नेकी बीना अेका अेकी कीसार नीरंद ॥४॥

गीत अशुद्ध लिखा हुआ है । भीडर उदयपुर के समीप शतावतों का एक प्रमुख स्थान है ।

५१६. ८६४१ रसरतनागर [रसरत्नाकर]

आदि — ॥अथ रसरत्नाकर लिप्यते ॥

दोहा — अलप निरंजन एक है, दूजा जानै कोइ ।

वै काहू कीना नई, वह कीना सब कोइ ॥१

चौपई— महमद नवी दीपत उजियारा । जाकै हेत रच्यौ संसारा ।

पुनि ता मित्र च्यारि विधि कीये, पंथ चलावनकुं पठये ॥२

अन्त — गंधक मारि धूलि करि लीजै । सो गंधक पारामै दीजै ॥

पारो मरकै होवै वा[छा]र । सोवन होत न लगावै वार ॥

अर्थ — गंधक आंमला सारानै एक सो पुट कांजीकी दीजै । तब गंधक मरै । ते गंधक पारो स्म[सम] मात्रा परलीयै सीशी भर चढावीजै । अग्नि पोहर १२ दीजै । पीतं भवति ॥ पु

५२६

६४८० राजा भोजरास

आदि — ॥दे०॥दूहा ॥ श्री संघेसर पासना, पाय कमल पणमेवि ।

सदगुरु चरणइ चित धरी, वलि सरसति समरेवि ॥१

सानिधकारी वलि सगुरु, प्रणमुं परमानंद ।

युग प्रधान जिनदत्त गुरु, श्री जिनकुसल सुरिद ।

अन्त — श्री परतरगछि जाणि दिगंद, श्री जिन माणिक्य सुरिदावे ॥१२॥

तास सीस वाचक वरदाई, कल्याण धार कहाईवे ॥१३॥

विनेय तास वाचक पद धारीवे, कल्याण लाभ हितकारीवे ॥१४॥

ते सह गुरुना प्रणमीया, वै कुशलधार उवकायावे ॥१५॥

संवत सतरह सय गुणतीस, माह वदि तेरस दीसैवे ॥ [१६]

पंचम पंड थयौ इहा पुरो, श्री सोजित नगर सतुरीवे ॥ [१७]

श्री जिनचंदसूरि गुर राजै, रच्यो रास सुष काजैवे ॥ [१८]

शिष्य ध्रमसागर आग्रह करिनै, आ रची वात सुष धरिवैवे ॥ [१९]

आगे का अंश व्रुटित है ।

५३३.

६१२८ राधावल्लभका प्याल (प्यालायत)

आदि — श्री राधावल्लभोजयति । अथ प्यालायत लिप्यते ।

परभातका प्याल

सुतडीनै काहि न छेडौ रूड़ा म्हांनै आलसियौ आवै ।

द्रिग हिय म्हारा पगां छुवायौ या नहीं वात सुहाव ॥ १

हो लाडीजी थारो औ कांई किसडी सुभाव ।

पिय आधीन रहैं कर जोड्या तोही भीह चढाव ॥ २

अन्त -

मेघ मलार

अैसे मेहमें पाईये प्यारो न्यारी कवहुं न कीजीये एक पल ।

गरह लगाये आंकै भरि लैही पीत बढईया ॥ ४४

राग टोडी

राजि म्हारौ भरियौ माट उठावौ वेटा रावरा ।

जे उठाऊं गोरडी म्हारें जे घरवासी होय ॥ ४५

पुस्तक के प्रारम्भिक ख्याल प्रतिष्ठान में प्राप्त महाराजा बहादुरसिंह कृत ख्याल ग्रन्थाङ्क १३७५२ से मिलते हैं। विषय, भाषा और शैली की दृष्टि से 'ख्यालायत' के समस्त ख्याल उक्त किशनगढ़ महाराजा बहादुरसिंह कृत ही ज्ञात होते हैं। ग्रन्थाङ्क १३७५२ में सङ्कलित ख्याल भिन्न और लघु रूप में लिखित होते हुए भी संख्या में केवल ८१ हैं और 'ख्यालायत' में प्रत्येक ख्याल पूर्ण रूप में है। "ख्यालायत" के अन्त में "पुष्पिका" नहीं है जिससे कुछ ख्यालों का लेखन में छूट जाना भी संभव है। राजस्थानी भाषा में लिखित गीत-साहित्य की यह उत्कृष्ट कृति अब तक अज्ञात रही है। महाराजा बहादुरसिंह और इनकी रचनाओं के विषय में विशेष ज्ञातव्य मेरे द्वारा सम्पादित एवं प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित "राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २" में पठनीय है। —सम्पादक

५५८.

८१६१ रूपदीप भाषा

आदि - ॥ श्री गणेशाय नमो ॥ अथ पिङ्गलौक्य रूपदीप भाषा लिप्यते ।

दोहा ॥ शारदा माता तू बड़ी, सुबुधि देहु दरिहाल ।

पिङ्गलकी छाया लिये, वरनें बावन चाल ॥ १

गुरु गणेशके चरण गहि, हिउँ धारिकै विष्णु ।

कुवर भुवानीदासकों, जुगति करै जे कृष्ण ॥ २

प्राकृतकी बानी कठिन, भाषा सुगम प्रतक्ष ।

कृपारामकी कृपासुं, कंठ करै शव सिक्ष ॥ ३

अन्त - ॥ सोरठा ॥ द्वज पुहकर न्यात, तिसमै गोत कटारिया ।

सुनि प्राकृतसु वात, तैसै ही भाषा करी ॥ ५४

॥ दुहा ॥ वावन वरनी चाल सव, जैसी मोमै बुध ।

भूल भेद जाको लहो, करो कवीस्वर सुध ॥ ५५

संवत सत्रैसै वरस, ऊर विहतर पाय ।

भाद्रव सुद दुति गुरु, भयो ग्रंथ सुष पाय ॥ ५३ [५६]

इति श्री रूपदीपक भाषा संपूर्ण ॥ लिपित रामदास कवीरपंथी । संवत १६२६
श्रावण वदि ११ बुधवारे ॥ सतनाम कवीरकी दया संत महंतकी दया सुं ॥ १ ॥

६३६

७८७५ शत्रुभेद

रचना का आदि भाग पत्र सं० १ के अभाव में अप्राप्य है ।

अन्त — राजभृत्य होय ते समुझइतैं लीजिये ।

जू मंत्रीजन होय सो अवस्य पहचानिये ॥ ४

दोहा ॥ संवत अठारह सै विते, चौपन मृगसर मास ।

शुक्ल पण्य एकादसी, कीनी ग्रंथ प्रकास ॥ ५

चौपही ॥ कृष्णदुर्गमें ग्रंथ बनायो । जैसी मति मेरीमें आयी ॥

नृप बहादुरकै विरद कुमार । तिनकै सिंघ प्रताप निहार ॥

तिनकै कवर दोय सुषदाई । इक कल्याण अरु केसरभाई ॥

तिनकै मंत्री नीति प्रकास । कियो ग्रंथ यह जोगीदास ॥

इति श्री सत्रुभेद ग्रंथ मोहनौत जोगीदास कृत संपूर्णम् । शुभमस्तु । संवत १८६२
कातिक वदि १२ ।

विशेष—प्रस्तुत रचना किशनगढ़ नरेश महाराजा बहादुरसिंह के पौत्र कल्याणसिंह
और केसरसिंह के मंत्री जोगीदास मोहनौत कृत है और रचनाकाल के ८ वर्ष पश्चात् लिखित
होने से महत्त्वपूर्ण है ।

७५१.

८६१५. सूर्यनाथमंगल, वैद्यक ग्रंथ

आदि — ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सूर्यनाथमंगल वैद्यक ग्रंथमेंधि[थी] चिकित्सा
लिप्यते ।

पहीले लछिन शाध्यके कहूं, ज शास्त्र विचार ।

किर अशाध्यके दोहरे, अब कहिये नीरभार ॥ १

अन्त — निव त्वचा पीपलि वासी पांणीसूं नेत्राजन जल प्रवा[ह] होय

सम १ निलो थथो पांड निवुंका रससूं लावै वीमची द्राद जाय ।

इति श्री दीपनाथ सिष्य रूपनाथ जोगीस्वर निर्वाण विरचितायां रूपनाथ मंगल
समाप्त । संवत् १६०८ भादवा बुदि ७ सोमवासरे लिखितं ब्राह्मण छोटेलाल पठनार्थ पंडित
भगवानदासजा ।

७६४.

९४२२ हमीर रासो

आदि — ॥ श्री गणेशाय नमः[ः] । श्री सरस्वतीन्म[नमः] । श्री गुरुभ्यो
नम [श्री गुरुभ्योनमः] अथ हम्मीररासो लिखते [लिप्यते] ॥

दोहा ॥ श्री गनेस गुरु सरस्वती, बुधि बानीके दानि ।

कवि महेश स बरनन करत, हठ हमीरको जानि ॥ १

पहिलै साहि सुमरियै, सबको सिरजनहार ।

आदि भवानी अंजिका[अम्बिका], श[शा]रदै सुरति सम्हार ॥

अन्त - ॥ छंद ॥ मिलै राव पतिसाहि, छीर ज्यों नीर वहाये ।

जो पारसकीं मिलत लोहो, कंचन हो आये ॥

अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय ।

कवि महेस ईम उचर[रै] वे वसे सुरग सब कोय ॥ ३६५

॥ दोहा ॥ कवि महेस वननै [वर्णन] कीयो, रासो राव हमीर ।

भूल चूक ज्यों होय तो, माफ़ करो तकसीर ॥ ३६६

ईती श्री राव हमीरको रासो संपूर्ण । लीखित नाजर न[नै]एसुष न बांच वच्याश
सुंज्यां रांम रांम रांम रांम वंचजो जी ॥

२१७

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ

अजितदेव सूरि ११
अजीतसागर २१
अनन्तानन्द २७
अनोपसिंह ३०
अभयधर्म १६
अभयसोम ३०, ३६
अमीचंद ३५
असायित ४८

आ

आनंद ७
आनंद कवि ७
आनंदघन महाराज ११
आलमचंद ३१

क

कनककीर्ति १३, १६
कनकसोम २८
कबीर ७
कबीरदास ५
कमलकलशसूरि २६
कर्पूरविजय ३६
करमसिंह ३
कल्याणसागर २१
कान्होजी [कीर्तिसुन्दर] २३
किशन ७
कुंवर विजय मुनि २
कुमुदचंद्राचार्य (अपर नाम सिद्धसेनाचार्य) ६
कुशलधीर ३३
कुशललाभ ६, १४, ३०

कुशलसंयम ४८
कृपाराम वारहठ ३३
केशवदास ३२
केशराज ३३, ३४

ख

खेमदास स्वामी ४७

ग

गुणसागर १४, २६, ३६
गुणसागर पदमसागर शिष्य ४०
गेलराज शिष्य (?) ३१
गोरार्च २५

घ

घनसार ४

च

चतुर्भुजदास २६
चन्द कवि २६
चन्द वरदाई कवि २६
चरणदास ११

छ

छीहल कवि २२

ज

जनगोपाल १६, २२
जयतीदास १७
जयकृष्ण ३५
जयकृष्ण पुष्करणा, भवानीदास सुत ३५
जयमल २४
जयरंग ६
जिणचंद २५, ४३

जिनस्त सूरि ३७

जिनरंग (?) ४७

जिनरतन सूरि ३२

जिनराज १०

जिनराज सूरि ४०, ४५

जिन हर्ष २६, ३६, ४३

जिन हर्ष सूरि ३६

जिन हरष २

जिनोदय ४८

जिनोदय सूरि ४८

जमलकृषि २४

जोधराज गोदीका ४३

झ

झांझणा, गुरु शिष्य (?) ४४

ट

टोडरमल, ३४

त

तिलोकचंद १६

द

दौपविजय कवि २०

देवप्रानन्द ज्ञानचंद्र शिष्य १५

देवप्रानन्द, दरजी २

देवचंद २, ३७, ४२, ४३

देवराज मुनि ४६

देवीचन्द ८, २६, ४४

देवीचन्द कृति ११

देवीदास २२

न

नमस्त ४१

नमस्तस्य, नमस्तस्य मुनि ३८

नमस्तस्य ३६, ४६

नमस्तस्य ४७

नमस्त ७

नारायण ३२

नारायण मुनि २५

प्र

प्रधीराज ७

प

पद्मचंद सूरि ८

पारु[र्व]चंद १, १३, ३०, ४०, ४५

पाशचन्द सूरि ४७

पेमराज ३८

व

वलिभद्र १६

वहादुरसिंह, महाराज ३४

भ

भक्तिलाभ ४७

भगतराम पचोली १२

भट्ट कवि २७

भट्टली २८

भर्तृहरि २१

भवानीदास व्यास २३

भास्कराचार्य ३५

भोमजी आढा १३, ३१

म

मतिकुशल १०

मति दोखर ६, २६

मतिसार १८

मनरंग ४४

मनरूप १२

महानंद ३५

महावीराचार्य ८

महेन्द्र कवि ४८

माधोदास ६, ३४

मानसागर ३६

मानसागर, जतिनागर शिष्य ३६

मानदेवजी, राय ३०

मुंहणोत जोगीदास ४०

मुहम्मद गजाली यू. ७

मेघराज मुनि ४३

मोहनविजय १०, ११, ३०, ३१, ३२

र

रत्नचरित्र ४३

रत्नसागर ४३

राम कवि ३४

रामचन्द्र, पद्मरंगशिष्य ३४

रामविजय, दयासिंह मुनि शिष्य ११

रामानन्द ३४

रूपनाथ जोगीश्वर ४७

रूपवल्लभ, रघुपति गणि शिष्य ३२

रूपवल्लभ गणि ४७

रूपविजय, मानविजय शिष्य ३०

ल

लब्धोदय २३

लब्धोदय गणि २३

लक्ष्मीवल्लभ ६

लाभवर्धन २४, ३५, ३६

लाभवर्धन, शान्तिहर्षगणि शिष्य १६

लालचंद १६, ३५, ३६

लावण्यक्रीति ३३

लावण्यसमय १०

लावण्यसमय मुनि २२

व

विजयदेव सूरि ४२

विजयभद्र ५

विजयभद्र सूरि ६

विनय हुवर ३५

विनयविजय गणि, महोपाध्याय ३६

विनय[विनीत]विमल, गंभीरसागर शिष्य

३७

विनयविजय यशोविजय ३६

विमल हर्ष ४०

स

सन्तदासजी ४३

समयसुन्दर ८, १५, १६, १७, १८, १९,

२१, २२, २३, २५, ३१, ३३, ३४,

३६, ४०, ४४, ४५

समरचंद्र सूरि ४

समरसिंघ २६

समरो २

सहजसुन्दर ४१, ४७

सांमलदास ६

साधुविजय १५

सार, श्री ३

सुखसागर कवि १६

सुधाभूषण ६

सुन्दरवाचक १

सूरसागर १३

सैदपहार, सैद हमजासुत ३२

सोमप्रभ ४६

सौभाग्यसुन्दर ४४

ह

हर्षसागर शिष्य (?) ४६

हरचंद १

हीरानन्द सूरि २

क्ष

क्षुल्लक कुंवर ४५

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-साला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक - गीर्णान्यायकेशरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६.००
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य-१.७५
३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन श्रीभाषणीत, सम्पादक-म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०.७५
४. तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत, सम्पादक-डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य-३.००
५. कारकसंघोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१.७५
६. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-२.००
७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-२.००
८. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१.७५
९. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१.७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., लिट् । मूल्य-२.७५
११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि उदयरजप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण वहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.२५
१२. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य-३.५०
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-३.७५
१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-४.७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-४.२५
१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण वहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित । मूल्य-१.५०
१७. ईश्वरदत्तासमहाकाव्यम्, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य-११.५

१८. रसदीर्घिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.००
१९. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्री मधुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य-४.००
२०. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पादक-श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य-१२.००
२१. " भाग २ " " " मूल्य-८.२५
२२. वस्तुतत्त्वकोष अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० प्रियबाला शाह । मूल्य-४.००
२३. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी । मूल्य-४.००
२४. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत, भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित । सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा । मूल्य-३.७५

राजस्थानी और हिन्दी

२५. बान्हडदेवबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पादक-प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए., । मूल्य-१२.२५
२६. क्यांमखां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पादक-डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा । मूल्य-४.-७५
२७. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक-श्रीमहतावचन्दखारैड़ । मूल्य-३.७५
२८. बांकीदासरी ख्यात, कविवर बांकीदासरचित, सम्पादक-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य-५.५०
२९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक-श्रीनरोत्तम स्वामी, एम.ए. । मूल्य-२.२५
३०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पादक-श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न । मूल्य-२.५०
३१. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत । मूल्य-२.००
३२. जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-१.७५
३३. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पादक-श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य-१.७५
३४. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १ । मूल्य-७.५०
३५. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २ । मूल्य-१२.००
३६. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसीकृत, सम्पादक-श्रीब्रद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य-८.५०
३७. रघुवरजसप्रकाश, किसनाजीआढाकृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस । मूल्य-८.२५
३८. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २, सम्पादक-मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य-४.५०
३९. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २—सम्पादक-श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., साहित्यरत्न । मूल्य-२.७५
४०. वीरवाण, ढाढी बादरकृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-४.५०
४१. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ संग्रह सूची, सम्पादक-श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित । मूल्य-६.२५
४२. सूरजप्रकाश, भाग १—कविया करणीदानजी कृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस । मूल्य-८.००
४३. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंह कृत—सम्पादक-श्री रामप्रसाद दाधीच एम.ए., मूल्य-४.००

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजय ।
३. कर्णामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—श्री एम. सी. मोदी ।
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—श्री वी.जे. सांडेसरा ।
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०—श्री वी. डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०—श्री एच. डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक " " "
११. स्वयंभूच्छन्द, कविस्वयंभूरचित " " "
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०—मुनि श्री जिनविजय ।
१३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, " श्री एम. एन. गोरी ।
१४. एकाक्षर नाममाला—सम्पादक—मुनि श्री रमणीकविजयजी ।
१५. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०—डॉ. प्रियवाला शाह ।
१६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०—डॉ. श्रीदशरथ शर्मा ।
१७. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१८. रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित " "
१९. स्थूलभद्रकाकादि, सम्पा०—डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
२०. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०—डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२१. घटलपरादि पंचलघुकाव्यानि ,, पं० अमृतलाल मोहनलाल ।
२२. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०—पं० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।
२३. वृत्तमुक्तावली, श्रीकृष्ण भट्ट गुम्फित, सम्पा० पं० श्री मथुरानाथ भट्ट

राजस्थानी और हिन्दी

२४. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०—श्रीवद्रीप्रसाद साकरिया ।
२५. गोरा बादल पदमिणी चक्रपई, कवि हेमरत्नकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
२६. राजस्थानमें संस्कृत साहित्यकी खोज, एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दीअनुवादक—श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२७. राठौंडारी वंशावली, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
२८. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक—मुनिश्रीजिनविजय ।
२९. सीरां-वृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
३०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक—श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
३१. सूरजप्रकाश, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०—श्रीसीताराम लाळस ।
३२. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी-साहित्य की देन—डॉ० मोतीलाल गुप्त ।
३३. रुक्मिणी-हरण, सांयांजी भूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ।

विशेष—पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमिशन दिया जाता है ।

